श्री सम्मेत शिखर पहाड़ के अधिष्ठाता

श्री भोमियाजी महाराज

—: की :—

भजनावली

प्रकाशक :

ताराचन्द बोथरा

श्री भोमियाजी महाराज की 'फंड कमेटी'

कलकत्ता

भजन रचयिता :

अमरचन्द दफ्तरी

एकादश आवृत्ति २०००] सं० २०२६ [मूल्य १.७५ पैसे

अनुक्रमणिका

पृष्ठ

जाप मंत्र

यह स्त्रोत्र को १ वर्ष तक रोज गिनने से शरीर के अन्दर की पीड़ा दूर होती है (इस मन्त्र को पढ़कर पानी पिलाना)।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लूं श्री सम्मेत शिखर अधिष्ठाता श्रीभोमिया देवायसुप्रसन्नो भव मम स्वप्ने शुभाशुभं कार्य सिद्धि फलं देहि देहि कुरु कुरु स्वाहा ।

ऊपर लिखा मन्त्र काली चौदस दिवाली के तीन दिन सवा लाख जाप करने से स्वप्न में दर्शन मिलता है—और धारे हुए संकल्पों का जवाब मिलता है। तीनों दिन आयम्बिल करके जाप करना व ब्रह्मचर्य पालना।

ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षैं क्षः श्री भोमियादेव क्षेत्रपालाय नमः ।

इस मन्त्र का रोज १०८ बार जाप करने से जीवन में शान्ति होती है और व्याधि नाश होती है।

अष्टभैरव के नाम

१ भैरव २ महाभैरव ३ चण्डभैरव ४ रुद्रभैरव ५ कपालभैरव ६ आनन्दभैरव ७ कंकालभैरव ८ भैरव ।

—: भजन रचयिता :—

श्री अमरचंदजी दफ्तरी

जन्म सं० १६५० भादवा सुदी १४

स्वर्गवास सं० २०२८ आषाढ़ वदो ११

श्री भोमिया बाबा के आप परमभक्त थे। आप न तो कवि थे न लेखक किन्तु आपने अपनी श्रद्धा भावना से जो भजनों की रचना की वे सराहनीय है। बावे के मन्दिर में जो जीर्णोद्धार कार्य हुवा या हो रहा है उसमें भी आपकी सेवाएँ प्रसंशनीय थी। आप मिलनसार, मृदुभाषी एवं सेवाभावी व्यक्ति थे।

ताराचंद बोथरा

मंत्री, जीर्णोद्धार स्पेशल फंड कमेटी

मधुवन, शिखरजी

—: पुस्तक प्रकाशक :—

श्री पुनमचंदजी तातेड़

जन्म स० १९६२ भादवा वदी ६

स्वर्गवास सं० २०२६ जेठ सुदी ३

आपके अन्दर भोमिया बाबा के प्रति अटूट श्रद्धा थी। जिर्णोद्धार कार्य में आपकी सेवाएँ प्रशंसनोय रही साथ ही आप बावे के भजनों के प्रकाशक थे। आप बहुत ही मिलनसार व्यक्ति थे।

ताराचंद बोथरा

मंत्री, जीर्णोद्धार स्पेशल फंड कमेटी

मधुवन, शिखरजी

॥ ॐ ॥

॥ भैरोंजी का स्तोत्र ॥

यं यं यं यक्ष रूपं, दश दिशि वसितं, भूमि कंपाय मानं ।
सं सं संहार मूर्ति, सिर मुकुट जटा शेखरं चन्द्र बिम्बं ॥
दं दं दं दीर्घ कायं, विकृत नख मुखं ऊर्ध्व रोमं करालं ।
पं पं पं पाप नाशं, प्रणमत सततं, भैरवं क्षेत्रपालं ॥१॥
रं रं रं रक्त वर्ण, कटि तुत सुतनु तीक्ष्ण दंष्ट्या करालं ।
घं घं घं घोर घोषं घघ घघ घर्चितं, घर्घराघोर नादं ।
कं कं कं काल पाशं, धृक् धृक् धृकिति, ज्वालिता कम देहं ।
तं तं तं तप्त देह प्रणमत सततं, भैरवं क्षेत्रपालं ॥२॥
लं लं लं लम्बदन्तं, लल लल ललितं, दीर्घ जिह्वा करालं ।
धुं धुं धुं धूम्र वर्ण स्फुट विकट मुखं भास्वरं भीम रूपं ।
रुं रुं रुं रुण्डमालं रुधिरतन मयं, ताम्रनेत्रम्, करालम् ।
नं नं नं नग्न रूपं, प्रणमत सतत भैरवं क्षेत्र पालं ॥ ३ ॥

वं वं वं वायु वेगं, प्रणत परिनतं ब्रह्म पारं परंतं।
खं खं खं खड्ग हस्तं, त्रिभुवन निलयं, भास्वरं भीम रूप ॥
चं चं चं चुं चलन्तं, चल चल चलितं चालिता भूत चक्रं ।
मं मं मं माय रूप, प्रणमत सतत, भैरवं क्षेत्रपालं ॥४॥

शं शं शं शंख हस्तं, शशिकर धवल, मोक्ष सम्पूर्ण तोयं ।
मं मं मं मद् मभूतं तंकुलम कुल कलं, मंत्र मुर्तिस्तु नित्यं ।
पं पं पं पद्मनाथं किलि किलि कलितं, गेह गेहं ललत ।
अं अं अं अंतिरिक्षं प्रणमत सततं, भैरवं क्षेत्रपालं ॥५॥
खं खं खं खम्भ भेदं विषय मृतक्षयं काल कलं करालं ।
क्षं क्षं क्षं क्षिप्र वेगं दह दह दहनं, तप्त संदीप्य मानं ।
हौं हौं हौं कार नादं प्रकटित गहनं गर्जिता भूमि कंपं ।
वं वं वं बाल लीलां प्रणमत सततं, भैरव क्षेत्रपाल ॥६॥

सं सं सं सिद्धयोगं, सकल गुणमयं, देवं देवं प्रसन्नं ।
पं पं पं पद्मनाथं, हरिहर भुवनं, चन्द्र सूर्याग्नि नेत्रं ॥
ऐं ऐं ऐश्वर्य नाथं, सततं भयहं, सर्व देव स्वरूपं ।
रौं रौं रौं रौद्र रूप, प्रणमत सततं भैरव क्षेत्रपालं ॥७॥
क्षं हं हं हंस हसित कहकहा मुक्ति वागाट्ट हासं ।

थं धं धं धंच रूप, शिर कपल जटा, बंध बंधाग्र ग्रस्तं ॥
टँ टँ टंकार वाणँ, त्रिदश टल टलँ, कामद पाप हारँ।
भुं भुं भुं भूतनाथं, प्रणमत सततँ भैरव क्षेत्रपालँ ॥८॥
इत्येवं भावयुक्तँ पठति च, नियतँ सिद्ध भैरवास्टकँचँ
निर्विघं दुःख नाशं असुर भयहरँ डाकिनी शकिनीनां
त्रासँते व्याघ्र सर्पों वहति च बहु शालीलया राज्य सँपत्
सर्वैनिश्यन्ति दूराट ग्रह विप भयहरँश्चोतिते सर्वसिद्ध ॥९॥
भैरवाष्टक मिदँ पुण्य, षष्ठमासान् पठति यः।
सयाति परमँ स्थानँ, यत्र देवो महेश्वरः ॥१०॥
सिंदुरा रुण गात्रंच सर्व जन्मनि निर्मलम्।
रक्तांबर धर देवँ, भैरवँ प्रणमाम्यह्य ॥११॥
॥ इति ॥

॥ मूल मन्त्र ॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षः।
खां खीं खूं खः घ्रॉ घ्रीं घ्रूँ घ्रः ॥
म्रां म्रीं म्रूँ म्रः म्रें म्रैं म्रों म्रौं।
ह्रौं ह्रौं क्लौं क्लौं, ॐ श्रौं ज्रौं ज्रौं।
ह्रूं ह्रूं ह्रूं ह्रूं मम सर्वतो रक्ष रक्ष भैरवाय नमः ॥

॥ भैरवाष्टकम ॥

एक खट्वाङ्ग हस्तँ पुनरपि भुजगं पाशमेकं त्रिशूलं
खङ्ग हस्ते कपालं डमरू कसहित वाम हस्ते पिनाकम् ।
चन्द्रार्क केतु मालां विकृत नर सिरः सर्प यज्ञोपवीतं
कालं कालान्धकारं मम हरतु भयं भैरवं क्षेत्रपालः ॥१॥
नीलं जीमूतवर्णं सकल शतमय भैरवं क्षेत्रपालः
रुद्रं रुद्रावतारं ज्वलित शिख शिखं रौद्रके शंखदष्ट्रं ।
भीमाङ्ग भीमनादं कलित कलरवं वन्द्यपादं त्रिलोक्या
ज्वाला माला करालं मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥२॥
कैलाशे मेरुशृंगे दिशि-दिशि गहने दैत्य नैला निवासे
पाताले मृत्युलोके जलनिधिपुलिने कानने सर्व तीर्थे ।
सौम्ये सूर्याधिवासे ग्रह फणि निलये द्वीप द्वीपान्तरेषु
सर्व स्थानेषु पूज्यं मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥३॥
सिद्धान्ते कूलमार्गे पथि कुलिकमते मन्त्र तन्त्रे समस्ते
देवे ब्रह्मावतारे विविध जिनमते सर्व शास्त्र प्रसिद्धे ।
खङ्ग पाताल हस्त वर रस गुटिका मञ्जनं पाद लेयं
सर्व कतु समर्थ मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥४॥
हुँकारैर्घोरनादै श्चलतिव सुमति सागरं मेरु शृंगं

ब्रह्माण्डं ब्रह्मखण्डं स्फर तिक हककहाराव रौद्राट्टहासं
खंग पाताल मूलं वरुण कसहितं पाशखट्वांग हस्ते
ह्राँ ह्रीं ह्रूँ मोह रूप मम हरतु भयं भैरव क्षेत्रपालः ॥५॥
कंकालं कालरूपं कल कल सहितं भूत वैताल नाशं
ह्राँ ह्रीं ह्रौं मूमूर्तितं घघ घव घटितोद्गार रौद्रानि मन्त्रै
भूतै प्रेतै प्रभुतैरूप शमत महायक्ष रक्षः पिशाचैः
ह्राँ ह्रीं ह्रूँ सर्व पूज्यं मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥६॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रा सुरसरिदमरा सोम सूर्याग्निरूपा
आकाशे वायु भूमिर्जलमिनि सकल यस्य मूर्तिस्वरूपम् ।
चाल्येन नरहवेतं सकल शिव मयं सर्वरूपं प्रशान्तं
सर्व ज्ञान प्रसिद्ध मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥७॥
क्षेत्रे पीठे प्रपीठे त्रिभुवन निलये द्वीप चण्डे प्रचण्डे
चामुण्डा विघ्नहंत्री गणपति सहितैः प्रेत भूतैः प्रसिद्धैः
राज्ञो वश्यकराणौ च सकल कुशलैः मन्त्र मन्त्रै समस्तैः
सर्व कल्याण हेतुर्मम हरतु भयं भैरवः क्षेत्रपालः ॥८॥

सर्व पाप हरं पुण्यं स्तोतव्यं भैरवाष्टकम्
ब्रह्म राक्षस नाशाय व्याध्युपसर्ग नाशनम्
अपुत्रो लभते पुत्रान् बद्धो मुच्येत बन्धनात्

त्रिसन्ध्यं पठति यस्तु सर्वसिद्धिमवाप्नुयात् ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं वटुकाय आपदुद्धारणाय कुरु कुरु
वटुकाय ह्रीं स्वाहा ॥

॥ अष्टप्रकारी पूजा मन्त्र सहित ॥

(आह्वान मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्री श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमियादेव अत्र अवतर-अवतर स्वाहाः ।

(प्रतिष्ठापन मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्री श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमियादेव अत्र तिष्ठ तः ठः ठः-स्वाहा ।

॥ पूजा प्रारम्भ ॥

(जल पूजा)

ॐ प्रथम पूजा जल की करो, प्रक्षालन आनन्द ।
शुद्ध जल से भर कलश लो, निरमल करके मन ॥
श्री अधिष्ठायक देव का, न्हवण करावो आय ।
मनके मैलको धोयकर, पूजा में चित लाय ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्टाता भोमिया देव चरण कमलेभ्यो जलार्चन यजामहे स्वाहाः।

(तेल सिंदूर पूजा)

अतिरिक्त पूजा तेल की, लागे वावे अंग।
वेला चमेली मोगरा, रकम-रकम सुगन्ध ॥
श्री अधिष्ठायक देवके, अङ्ग पूजा विशेष।
तेल सिंदूर लगे अङ्ग में, सजे वरग हमेश ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्री श्री श्री सम्मेतशिखर अधिष्टाता भोमिया देव चरण कमलेभ्यो, तैलार्चन यजामहे स्वाहाः।

(चन्दन केशर पूजा)

द्वितीय चन्दन पूजना, शीतल होवे ताप।
केशर से रचना करो, मिटे शोक सन्ताप ॥
श्री अधिष्ठायक देवके, चरचो चन्दन लाय।
जल गुलाव से घोटकर, माँहि वरास मिलाय ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्री श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्टाता भोमिया देव चरणकमलेभ्यो चन्दनार्चन यजामहे स्वाहाः।

(पुष्प पूजा)

तृतीय पूजा पुष्प की, केतकी और गुलाब ।
हार सुगन्धी गूँथकर, लाओ भर भर छाब ॥
श्री अधिष्ठायक देवकी, पूजा करो मन चित्त ।
रंग विरंगे फूल से, करो रचना नित नित ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण कमलेभ्यो, पुष्पार्चन यजामहे स्वाहा: ।

(धूप पूजा)

चतुर्थ पूजा धूप की, खेवो मिल सब आय ।
दुःख दारिद्र आवे नहीं, रोग सोग मिट जाय ।
श्री अधिष्ठायक देवके, सन्मुख खेवो धूप ।
दुख कीटाणु भस्म हो, होवे रूप अनूप ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण-कमलेभ्यो धूपार्चन यजामहे स्वाहा: ।

(दीप पूजा)

पंचम पूजा दीप लो, जगमग ज्योति जगान ।
चमके ज्योति ज्ञान की, होवे नौ निध्यान ॥

श्री अधिष्ठायक देवके, करो अखण्डित जोत।
अन्धकार दूर होवे, घर घर मङ्गल होत॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्री श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण-कमलेभ्यो, दीपार्चन यजामहे स्वाहाः।

(अक्षत पूजा)

अक्षत पूजा षष्टमी, अक्षत लावो जोय।
जीवकी जयणा देखकर, जीवजन्तु नहिं होय॥
श्री अधिष्ठायक देव के, आगे करो निशान।
दो तरफा त्रिशूलकर, स्वस्तिक बीच बनान॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण-कमलेभ्यो अक्षतार्चन यजामहे स्वाहाः।

(नैवेद्य पूजा)

नैवेद्य पूजा सप्तमी, लाओ भर भर थाल।
लड्डूपेड़ा बरफी घेवर, उत्तम मोदक माल॥
श्री अधिष्ठायक देव के, आगे धरो प्रसाद।
स्वीकारन अरजी करो, भूल चूक करो याद॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देवं चरण-कमलेभ्यो, नैवेद्यार्चन यजामहे स्वाहाः ।

(फल पूजा)

फल पूजा सबमें भली, फल से फल मिल जाय ।
फल से मन इच्छा फले, फल मौसम धरो लाय ॥
श्री अधिष्ठायक देव के, धरना फल सनमुख ।
शुद्ध मनका फल एकही, बिन मॉगे हो सुख ॥

(मन्त्र)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण-कमलेभ्यो, फलार्चन यजामहे स्वाहाः ।

अर्घ्य

ॐ ह्रीं श्री श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव चरण-कमलेभ्यो, अर्घ्य पदार्थ दशाच न यजामहे स्वाहाः ।

(सन्निटी करण)

ॐ ह्रीं श्रीं श्री सम्मेतशिखर अधिष्ठाता भोमिया देव अत्र मम सन्निहितो भव स्वाहाः ।

॥ समाप्त ॥

शिलाको

शिखर गिरि के भोमिया । कष्ट दूर होवे समरण कियां ॥
मधुवन में तेरा दरबार । जहां होती भक्तों की पुकार ॥
सुननाम कई आवे नरनार । धरे ध्यान कई करकर विचार ॥
जो मन शुद्ध से करता अरजी । उसपर बावेकी हो मरजी ॥
धन-हीन-ने दे धन पूर । तन की पीड़ा सब करे दूर ॥
अपुत्र्याने करे पुत्रवान । राजा घर होवे ऊँचो मान ॥
अड़्यो बड़्यो मतलब निकले ।
बिछुड़्यो सज्जन फिर आय मिले ॥
वैरी दुश्मी रो मान गले । ग्रह गोचर हलका जाय तले ॥
वैर विरोध सन्ताप टले । नहीं भूत प्रेत पिशाच छले ॥
बाबा की देखो चमत्कार । परचा प्रत्यक्ष हुआ अनेक बार ॥
पार्श्व पहाड़ के हैं रखवाल । इस तीरथ के हैं कोटवाल ॥
सम्मेत शिखर तीरथमोटो । मत जाणो इणने थे छोटो ॥
बीस तीर्थंकर मोक्ष गया । भेंटयाँ निस्तारो होय रहे ॥
मिल जुल सब यात्रा करजो । आज्ञा लेकर पहाड़ चढ़जो ॥
चढ़ते मन हिम्मत लाना । कायर बनकर नहीं थक जाना ॥

घूम फिर यात्रा करना। शुद्ध मनसे प्रभु का ध्यान धरना॥
कोई ऊपरविघ्न घटना आवे बावेको समरियां मिट जावे॥
कर यात्रा आवो बावेके द्वार। हुई सफल यात्रा दो समाचार॥
करिये बावे की पूजा सेवा। है सब देवों में श्रेष्ठ देवा॥
शुद्ध जलसे न्हवण करवाओ। दूध कलसो ऊपर ढलवाओ॥
तेल सिंदूर सुगन्ध लाओ। वरग सोना चाँदी सजवाओ॥
केशर से करो अंग रचना। पुष्पों का हार चाहिए जचना॥
नैवेद्य प्रसाद आगे धरना। स्वीकारन की अरजी करना॥
रखो धूप दीप बत्ती लाकर। निछरावल करना आ आकर॥
आरती बाजोंगाजो गावो। बावे का ध्यान मनमें ध्यावो॥
मूरति देख मन हरखावे। मुख शोभा वरणी नहीं जावे॥
'अमर' दफतरी की अरजी। रहुं भक्त सदा करना मरजी॥

॥ त्रोटक छन्द ॥

(दोहा)

पार्श्व पहाड़ चोटी तले, अधिष्ठायक दरबार।
बड़ वृक्ष नीचे लग रही, भक्तों की जय जयकार॥

(छन्द)

अधिष्ठायक जयकारं कष्ट निवारं पर उपकारं सुखकारं।
वन्दे नरनारं भाव अपारं शुभ विचारं मनधारं ॥
उठ सवारं निश्चय धारं शुद्ध अचारं विचारं।
परम उदारं सम्पति सारं सुख संसारके दातारं ॥ १ ॥

(दोहा)

करे भक्त भक्ति सदा, निश्चय धर मन ध्यान।
हाथ जोड़ अरजी करे, ध्यावे सन्मुख आन ॥

(छन्द)

मधुवन आन धरि शुभ ध्यानं, करि गुणगानं मतिमानं।
तू देव देवानं, कृपा निधानॅ, वंछितदानं, शुभमानॅ ॥
तत्ताथई तानं, नृत्यकरानं, स्वर से गानं, कल्याणं।
चतुर सुजानं, ध्यान धरानं, कर्म अनुसारे, फल पानं ॥२॥

(दोहा)

कलसों कलसों दूध ले, ढारत वावे अंग।
तेल सिंदूर से चरचकर, होत निराला ढंग ॥

(छन्द)

नित्य निराला, पूजनवाला लावे, माला, पुष्पकरं।
करते अंगी, मिल सब संगी, रंगपचरंगी, रंग विरंग ॥

चस केसर सारं तेल अपारं, सोना चांदी शृगारं।
पुष्पमाला धारं गौदुग्ध हारं अंगरचनारं, हितकारं ॥३॥

(दोहा)

मूरति मन मोहन घनी, गल बिच पुष्पन् माल।
मूछ मरोड़ी है अजब, घूंघरवाले बाल॥

(छन्द)

घुंघर बालं, गलबिच मालं, तिलक है भालं कपालं।
त्रिशुल चमकत घुँघरू झमकत, डमरू रमकत निरालं॥
मूछ है काली अजब निराली होठ की लाली मनहरं।
जय जय बोलत, छत्र हिंडोलत, चामर ढोलत युक्ति करं।४।

(दोहा)

ले आज्ञा चढ़े पहाड़पर, मनशुद्ध चित्त निरमल।
बल हीन बल पायकर करे यात्रा सफल॥

(छन्द)

निरमल चित्ते फरसो नित्ते कर्म कर्म काटन हित्त सेवतं।
मोक्ष पधारया, बीस अवतारा, हो निस्तारा, भेटतं॥
शुद्ध मन चढ़ना, आगे बढ़ना, पाठ पढ़ाना, भय हरॅ।
मत घबराना सफल बनाना, करके आना मन भरँ॥

(दोहा)

करे सहायता हर समय, थाम्रो सुणे पुकार ।
दुख दारिद्र दूर करे, बावो भरे भण्डार ॥

(छन्द)

थाम्रो अलबेलो, शरणो लेलो निश्चय खेलो, धीरधरं ।
भूल्याँ गेलो म्हारो हेलो, दौड़ आवेलो सहायकरं ॥
आफत में देलो, दौलत थेलो, ठेलमठेलो घर भरं ।
शान्ति देलो, कष्ट हरेलो, दूर करेलो, दुख दर्द ॥ ६ ॥

(दोहा)

पुत्र हीनेन पुत्र दे, धन्न हीनने धन ।
काया कष्ट निवार दे, लो बावे सु वचन ॥

(छन्द)

वच्चन जो देसी, कार्य सर सी, निश्चय होसी नामधारँ ।
लेवो शरना कभी न डरना, अरजी करना हितकारँ ॥
रहे निरोगी काया, घर में ही माया मनचाया, राज्यघरँ ।
सुपात्र नारी पुत्राभारी, दे शोक टारी जन्म भरँ ॥७॥
पत्थर ने पानी करे, स्याही करे सफेद ।
रङ्क ने राजा करे भाव रखे नहीं भेद ॥

(छन्द)

भाव रखे नहीं भेद रखे नहीं समझे सबको बराबरं।
निश्चय ध्यावे वो फल पावे, परचा दिखावे सरासरं॥
वंश हिरावत, दफ्तरी कहावत 'अमर' है गावत रागकरं।
अरज सुणी जो शरण रखी जो शांति दीजो, बराबरं॥८॥

॥ छन्द ॥

तूंही है देव, तूंही है दयाल तूंही अधिष्ठायक, तूंही कृपाल।
तूँही विशाल तूँही प्रतिपाल, तूँही मधुवनमें है रक्षपाल॥
तूँही गुणवन्त, है रूप अनन्त, तूंही सुखदायक तारसन्त।
तूंही हुजूर, दे संकट चूर, नहीं राखे दूर दे वंछित पूर॥
तूंही मुझ ध्येय, तूंही मुझ ध्यान, तूंही भक्तन करता पहचान।
तूही उदार, करता उपकार तूंही शरणागत राखन हार।
तूंही मनमोहन तूंही आधार तूँही सरदार तूंही करतार॥

तूँही है नायक तूँही है सहायक,
तूंही हैं निश्चिन्त करने लायक।
मेरे तो एक तूंही बस औरों को मैं जानूँ नहीं,
अब खोल नजर जरा देख इधर,
खड़ा दास 'अमर' करता है अरज।

॥ इति ॥

कहानी

(तर्ज—सुनो-सुनो ऐ दुनियाँवालों बापू की यह अमर कहानी)

सुनो सुनो ऐ भौमिया भक्तों, बावेकी यह अजब कहानी,
कुछ कुछ पता लगा है फिर भी, पूरी नहीं पहिचानी।
व्यन्तर देव और यक्ष योनी में, भोमिया नाम धराया,
सम्मेत शिखर तीरथ भूमी का, पहरेदार कहलाया।
इस भूमी का रक्षक बनकर, समकित धर्म स्वीकारा,
मधुवन में निवास किया, फिर दुष्टों को ललकारा।
जब से हुई इस पहाड़ की रचना; तबसे आप पधारे,
वर्णन मिला मुद्दत पहले का, करे मानता सारे
सुनो सुनो ऐ भोमिया भक्तों० ॥

* * * *

एक समय कोसाम्बीपुरी में, वीर प्रभु पधारे
रतनगढ़ में दी थी देशना, भरी परिषदा सारे

चन्द्रशेखर वृत्तान्त सुनाया, देशना मांहि सारा,
वीर प्रभू से पूछे परिषदा, कौन था राजकुमार।
वाराणसी का राजपुत्र था, चन्द्रशेखर बलधारे,
सम्मेत शिखर गया यात्रा करने संघ साथी परिवारे।
बीस तीरथंकर भेट भेट, फिर मन में बहु हरषाया,
बड़ वृक्ष नीचे भोमिया स्थाने, आज्ञा लेने आया
सुनो सुनो ऐ भोमिया भक्तों० ॥

* * * *

वीर प्रभू के पहले का यह, हाल सामने आया है,
यही प्रमाण पुराना देव का, ग्रन्थों ने बतलाया है।
अनेकानेक प्रमाण मौजूदा, प्रत्यक्ष चमत्कारी है,
ढूँढ़त ढूँढ़त मिल गया हमको, सच्चा समकितधारी है।
जिसके मन विश्वास है पूरा, उसको वैसा फल मिलता,
लाख लाख आफत आने पर, गली गली वो नहीं रुलता
सुनो सुनो ऐ भोमिया भक्तों० ॥

* * * *

जग में सबसे मोटो तीरथ, सम्मेत शिखर सुखकारा,
बीस तीर्थंकर मोक्ष गये जहाँ, भेट्याँ हो निस्तारा।
जब जब यात्री यात्रा करने, विषम पहाड़ों जावे,
पहले प्रथम भोमिया द्वारे आज्ञा लेने आवे।
भक्ति के माफिक दे शक्ति, कठिन पहाड़ पर चढ़ने की,
लम्बा रास्ता होने पर भी, देता शक्ति बढ़ने की।
विकट विकट पहाड़ों के ऊपर, निश्चिन्त होकर फिरते हैं,
भोमिया है रखवाला हम पर, नहीं किसी से डरते हैं
सुनो सुनो ए भोमिया भक्तों० ॥

* * * *

लम्बी चौड़ी कथा है इनकी, कौन कौन सी बतलावें,
थोड़े में समझा दिया सबको, पूरी कैसे समझावें।
आओ भक्तों बावे सनमुख, अपनी कथा सुनाओ,
सत्य अहिंसा सदाचार से, निज पक्के बन जाओ।
झूठ कपट न मन में रखकर, अपना हृदय सुधारो,
जब आफत अड़ास लगे, तब बावे को पुकारो।
करो मांगणी बावे आगे, पथ मारग दिखलाने को,

भक्त 'अमर' तो सबसे कहता, सत्य मार्ग अपनाने को
सुनो सुनो ऐ भोमिया भक्तों० ॥

जय जयकार जय जयकार होवे संघ में जय जयकार ॥
आज इकट्ठे होकर सब जन, बाबे को जगावें हम
संख्या बंध कण्ठों से सब मिल, जय जयकार बोलावें हम
जय जयकार जय जयकार होवे संघ में जय जयकार ॥

॥ प्रार्थना ॥

(हे प्रभू आनन्ददाता)

सम्मेत शिखर का भोमिया, तूंही मेरा सरदार है ।
घट बीच भक्ति है तेरी, सुख शांति का आधार है ॥१॥

संसार सुख की मांगणी, करता हूं तेरे सामने ।
काया कुटुम्ब और अर्थ कष्ट, भर जन्म मेरे न बने ॥२॥

पर भव निमित भी अर्ज है, मेरे ध्यान को सुधार दे ।
आरत रुद्र बचत रहूं, धर्म शुक्ल का ज्ञान दे ॥३॥

मैं कर्त्तव्य अपना पालूँ, तूँ भी अपना पालना ।
पिता और पुत्र का नियम, क्या है तूं संभालना ॥४॥

अशुभ कर्म भोगावली के आते हैं ये जब कभी ।
रोके रुके रुकते नहीं, पर शक्ति दिजो तुम तभी ॥५॥

मुझसे तेरे लाखों करोड़ों, मेरे तो तूँ एक है ।
मैं अन्य देव जाचूं नहीं, प्रतिज्ञा 'अमर' की टेक है ॥६॥

(तर्ज) कजरा मुहब्बत वाला

बाबा थे समकित धारी, ध्यावे आ दुनिया सारी,
भक्तों रा हो थे रखवाल, आया हो थोरे दरबार।
परचा थे देवो भारी, पावे आ दुनिया सारी,
निर्धन हो या धनवान, आया हो थोरे दरबार, ॥०॥
फागुन री पुनम आई, मधुवन में खुशियां छाई,
थोसू खेलणाने होली, भक्तों री टोली आई,
कलशो भर दूध ढलावे तेल सिन्दूर चढ़ावे,
अंगिया वर्गों री थारी, जिन पर माला मोतियनरी,
निरखे है सब नर नारी, आया हो थोरे दरबार ॥१॥
सुणियो हो बाबा में तो भक्तों रा थे रखवाला,
भक्तोरी नैया ने तो पार लगावन वाला,
महिमा है थोरी भारी, जोणे आ दुनिया सारी,
भक्त में थोरा बाबा, द्वार में थोरे आया,
करूणा रा थे दो भंडार, आया हो..........॥२॥
द्वार में बाबा थोरे, रॉची मंडल ओ आयो,
शरण में थोरी आयो, चरणो में शीश झुकायो,
अर्जी मोरी सुन लिजो, नैया थे पार करीजो,
बाबा में थोने ध्यावो, थोरा ही गुण में गावो।
थे ही हो मोरा रखवाला, आया हो..........॥३॥

तर्ज—झिलमिल सितारों का (जीवन मृत्यु)

होली खेलण बाबा थोरे द्वार पे म्हें आवो
थोरे साथ किनोड़ी म्हें प्रीत निभावो
प्रितरी थे रित निभाज्यो टाबर थोरा जाण जो ॥ होली ॥
दुर दुर सु चेला थोंरा तेल सिन्दूर ले आवे
तेल में सिन्दुर मिलाकर थोंरे उपर ढाले
बर्गो सु अंगियाँ, खुब रचावे
थोरे साथे किनोड़ी अे प्रीत निभावे ॥ होली ॥
छोटा मोटा नर और नारी पहाड़ करने जावे
थोंरी आसीसः लेकर बाबा, खुशी खुशी कर आवे
नाय धोयने आकर पुजा रचावे
थोंरे साथेः किनोड़ी अे प्रीतः निभावे ॥ होली ॥
"रांची मंडल" रा टाबरीया अे थोंसु ओ वर माँगे
भेदभावने त्याग एकता, सबरे मनमे जागे
चरणों में सब मिल, शीश झुकावे
थोंरे साथे किनोड़ी अे प्रीत निभावे ॥ होली ॥

॥ निवेदन ॥

तूं देव वही मैं भक्त वही, तूँ और नहीं मैं और नहीं ।
तूँ देव भोमिया जग सरदार, मैं भी हुवा हूं तावेदार ॥
कैसे भूल गया कुछ कह वतला, तूॅ और नहीं मैं और नहीं ।
मत भूल जा हूॅ भक्त खरा, रख छत्र छाया मैं हरा भरा ॥
वरामद कदाचित हुई गलती, तूँ और नहीं मैं और नहीं ।
वालककी भूल होमी मोटी, माइत समझे उसको छोटी ॥
है फरज आपका क्षमा करना, तूं और नहीं मैं और नहीं ।
पहले रखते थे मेहर वड़ी, हो गई नजर अब कैसे कड़ी ॥
नहीं पाया समझ क्या वात बनी, तूं और नहीं मैं और नहीं ।
करता हूॅ जोड़ हाथों अरजी 'अमर' परतो रखना मरजी ॥
सदा बीच हृदय निवास करो, तूं और नहीं मैं और नहीं ॥

॥ कव्वाली ॥

मेरे हृदय में चिपड़ी लगा करके
बावा भोमिया मोहर लगाया करूॅ ।
तुम सही या गलती उसे समझो,
मैं जगत में उसे वतलाया करूं ॥

यही कहता हूँ मैं तुम रूठा करो,
मैं हमेशा तुम्हें मनाया करूँ।
ठुकराया करो ठोकरों से मुझे,
मैं हमेशा तुझे अपनाया करूं।
भुलाया करो मुझे होगी खुशी,
झिड़कियाँ तुम्हारी मैं खाया करूं।
मतवाला बनूं मैं तुम्हारे लिये,
सदा प्रेम के गीत मैं गाया करूँ॥
हृदय में वीणा का साज सजा,
सदा गा गा तुम्हें रिझाया करूं।
जहाँ जहाँ होवें आपके चरण कमल,
वहाँ आँखें मैं अपनी बिछाया करूँ॥
कर कर पुकार करुणा से भरी,
बैठ बैठ मैं रट लगाया करूं।
यदि भक्ति में शक्ति 'अमर' के हुई,
तो घर बैठे हृदय में बुलाया करूँ॥
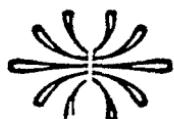
॥ भजन ॥

(करुणा पुकार)

हे दयालु देव ! बाबा अब तो करुणा कीजिये ।
शिखर गिरी के अधिष्ठाता, मेरी भी सुध लीजिये ।
॥हे दयालु॥ दुख सहे अनेक मैंने, आपसे कुछ छिपा नहीं ।
हो गया लाचार अब मैं, दुख मेरा हर लीजिये ।हे दयालु।
सुख में साथी हजारों होते, संकट में कोई नहीं । मुझे
भरोसा है सिर्फ तेरा, कुछ तो धीरज दीजिये ॥हे दयालु॥
क्या कसूर हुआ है मेरा, शुभ नजर करते नहीं । भक्तिमें
यदि फर्क है, तो परीक्षा कर लीजिये ॥ हे दयालु ॥
भक्त हूँ मैं निश्चय तेरा, क्यों कसौटी कस रहे । हुई देर
हद से भी ज्यादा, अब तो दृष्टि दीजिये ॥ हे दयालु ॥
सुनते पुकार बेतार जैसे, हजारों आनन्द छोड़कर अबकी
रूठ गये हो कैसे, शांति 'अमर' को दीजिये ॥ हे दयालु ॥

॥ भजन ॥

(लावणी चाल)

बोल बोल अधिष्ठायक भैरों
कांई थारी मरजीरे, सुनले अरजीरे ।

बहोत दिनांसु लगन लगी है कद थारा दर्शन पाऊँ रे ।
ऐसी करदे मरजी बाबा, मधुवन आऊँ रे ॥ सुनले० १ ॥
सम्मेत शिखर रा बीस तीर्थंकर, भेट्यां सफल जमारो रे ।
प्रण जगा रो तूं है भोमियो, होकम थारो रे ॥सुनले०२॥
दुनिया में तो परचो थारो, सब जाणे संसारी रे ।
यात्री आकर मनमें राखे, ध्यावना थारी रे ॥सुनले० ३॥
फागन महीने में श्रीसंघ रो, मेलो लागे भारी रे ।
दौड़ दौड़ दर्शन करवाने, आवे नर ओ नारी रे ॥सुनले० ४॥
छोटा मोटा बालक बूढ़ा, तेसुं खेले होली रे ।
लेले हाथमें झारी दूधरी, आवे टोली टोली रे ॥सुनले०५॥
मणो बन्ध दूधरी धारा, थारे ऊपर ढाले रे ।
दौड़े एकएक सूं आगे, मनरी कसर निकालेरे ॥सुनले० ६॥
रकम रकम पूजा सामगरी, भेला हुआ सब लावेरे ।
ठाट बाटसूं पूजा करके आनन्द पूरो पावे रे॥ सुनले० ७॥

महेर अब तूँ कर दे बाबा, श्रीसंघ ने दे शान्ति रे।
थारी महेर बिन कोई आगेपग, धरे किन भाँति रे ॥सु० ८॥
भूल चुक तूँ कर दे माफी, तूँ माइत हूँ टाबर रे।
बिती बात बिसार दे बाबा, घणो हठ ना कर रे ॥सु० ९॥
थारी म्हारी है अपणायत, जद सुं प्रीत तें घाली रे।
डोढ़ी थारी आकर किसविध, अब मैं जाऊ खाली रे ॥सु० १०॥
सम्मत उगणी से साल पचाणु, अन्धकार एक आयो रे।
टूट पड़यो बड़वृक्ष मंदिर पर, भारी कोप दिखायोरे ॥सु० ११॥
अड़े छेड़े डाल गाछ री, बीच विराज्यो बाबो रे।
चमतकार देख्यो ताजुबरो अजब तमासो थारो रे ॥सु० १२॥
श्री संघ अपणी देख रेख में, जीर्णोद्धार करायो रे।
सरधा सारु दे दे सहायता, मन्दिर बणवायो रे ॥सु० १३॥
साल सताणु सुद फागुन री, नींव दूजने घाली रे।
देख उद्धार भक्तों रे मनमें, हुई खुशीयाली रे ॥सु० १४॥
सच्चे मन रो बीज बोयोड़ो, कदने निस्फल जावेरे।
'अमर' कहे धीरज धरो भांया, बदलो चुकावेरे ॥सु० १५॥

॥ भजन ॥

(तर्ज – केशरिया थांसू प्रीत करी रे सांचा भाव सूँ)

(चाल-लावणी-भैरवी कहरवा)

म्हारी लगन लगी है दर्शन करलोरे भैरवनाथका ॥म्हारी॥
पहाड़ शिखर के भोमिया हो, अधिष्ठायक हो आप ।
मधुबनमें बड़ वृक्षके नीचे प्रगट रह्या साक्षातजी ॥म्हारी१॥
देख मूरत बावे की शक्ति, बड़े-बड़े चकरावे ।
ऐसा रूप बना है जिससे, रोम रोम हरखावेजी ॥म्हारी२॥
घूंघर वाला बाल निराला गलपुष्पन का हार ।
तनपर तेल सिंदूर लगा है, लिया त्रिशूलको धारजी ॥म्हारी३॥
दूर दूर से यात्री आकर मोदक भोग लगावे ।
रकम रकमकी रचना करके, कलसों दूध ढलावेजी ॥म्हारी४॥
देखो चमतकार बावे की, लीला अपरम्पार ।
सच्चे मनसे करे ध्यावना, उसकी हैं पौबाराजी ॥म्हारी५॥
जिस पर दृष्टि आपकी पड़ती, होता प्रतक्ष चमतकार ।
जैसेको तैसा फल मिलता, भाग्यपुन्य अनुसारजी ॥म्हारी६॥
पार्श्व पहाड़ के कोटवाल हो, समकित धारी देव ।
ले आज्ञा हम जाय पहाड़पर, करो रक्षा सुखमेवजी ॥म्हारी७॥

भक्ति के वश वशीभूत हैं, हाजर खड़े हजूर।
दुष्ट देव दुरजन आफत में, करते संकट चूरजी ॥म्हारी८॥
भक्त 'अमर' की आशा पूरी चैत तयासी साल
समय समय पर करी सहायता, जब जब किया
सवाल जी ॥म्हारी ९ ॥
अब अरजी है हमारी दीनपति, काटो दुख की फाँस
मेरा मनोरथ जल्दी पूरो, सुनकर ये अरदासजी ॥म्हारी१०॥
काया नीरोग रखियो हरदम, लक्ष्मी ठाठ लगाओ।
धर्म ध्यान में लीन रखो नित, झंझट से बचाओजी।
॥ म्हारी ११ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—कव्वाली)

मैं आया तेरे आसरे कुछ लेकर जाऊंगा।
दुःख दर्द की सारी कथा, तुमको सुनाऊंगा ॥मैं० १॥
दुःख का सताया छटपटाया, आया तेरे द्वार।
अब ले प्रतिज्ञा बैठ यहीं पर, ध्यान लगाऊंगा ॥मैं० २॥
भक्त तेरा कहलाता हूँ, इस जीवन काल में।
दुनियामें रहकर ऐसा दुःख मैं, कबतक पाऊंगा ।मैं०३॥

सम्मेत शिखर का भोमिया, सुणे भक्तों की पुकार।
दुनिया में डंका बज रहा, मैं भी बजाऊँगा ॥मैं० ४॥
करुण पुकार सुनकर मेरी, अब जल्दी करो उद्धार।
सोच समझ दो फैसला, हक पूरा पाऊँगा ॥ मैं० ५ ॥
'अमर' की अरज मंजूर कर, दो फतेह वरदान।
शान्ति मिले हर समय, तेरा गुण गाऊंगा ॥ मैं० ६ ॥

भजन

(चाल—माया के लोभी बाप ने)

आफत में संकट कटता है, बावे के समरन से।
सिद्ध होती है मन कामना, बावे के समरन से ॥
सम्मेत शिखर के भोमिया का, परचा जग विख्यात।
सबका दुख निवरता है, बावे के समरन से ॥आफत॥
मन चित्त से भक्ति जो करे, होती है इच्छा पूर।
रोग सोग मिट जाता है, बावे के समरन से ॥आफत॥
भक्तों की करता सहायता, सुनता है पुकार।
रक्षा होती हर समय, बावे के समरन से ॥ आफत ॥
राज-सत्ता का कोप हो, या दुश्मन का हो डर।
होती है विजय सब जगह बावे के समरन से ॥आफत॥

दुनिया में सच्चा देव है, है प्रत्यक्ष चमत्कार ।
'अमर' को आनन्द मिलता है, बाबेके समरन से ॥आफत॥

भजन

(चाल—काली कमली वाले तुमको)

अधिष्ठायक बाबाजी, मेरा प्रेम नमस्कार ॥ दर्शन को यात्री जन आवे, मधुवन आकर ध्यान लगावे। होवे आनन्द अपार ॥ मेरा प्रेम ॥ रकम रकम सामग्री लावे, नैवेद्य प्रसाद चढ़ावे बोले जय जयकार ॥ मेरा प्रेम ॥ भर भर कलस दूध का ढारे, तेल सिंदूर बरग शृंगारे, लावे सुगन्धित हार ॥ मेरा प्रेम ॥ रतन जड़ित मुकुट विराजे तुर्रा किलंगी ऊपर छाजे। बाजे बाजों की झणकार ॥ मेरा प्रेम ॥ नर नारी मिल मंगल गावे। ताल मृदंग और झांझ बजावे, नाचे नव नव ताल ॥ मेरा प्रेम ॥ लगन लगी भक्तों की तुझमें। 'अमर' कहे रहे भक्ति मुझमें, तू है प्राण आधार ॥ मेरा प्रेम ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—कव्वाली)

छुड़ाओ भक्त को संकट से, अरज बाबा हमारी है।
पड़ा हूँ आन चरणों में, शरण अबतो तुम्हारी है ॥छुड़ावो॥

भुलाकर आपको बाबा, पड़ा हूँ दुख के फन्दे में।
कहूँ क्या हाल मैं पिछला समय कैसे गुजारी है ॥छुड़ावो॥

कुग्रह ने आन के घेरा, किया बड़ा बेहाल है मेरा।
छिपी है आपसे जो क्या, दशा होती हमारी है ॥छुड़ावो॥

खड़ा हूँ देर से दरपे लगाकर ध्यान चरणों में।
अरज मेरी ध्यान से सुनिये, खोल दू मनकी सारी है
॥छुड़ावो॥

कभी पीड़ा न हो तन की, इच्छा पूरी होवे मनकी।
पुत्र-परिवार सुख होवे, करो समझूं विचारी है ॥छुड़ावो॥

न हो शत्रु कभी शिर पर, धर्म में लगन रहे दिन रात।
'अमर' की आशा यह पूरो, तेरा दरबार भारी है ॥छुड़ावो॥

॥ भजन ॥

सच्चे अधिष्टायक हो देव भक्त का दुख मिटानेवाले।

तेरा है मधुवन में दरबार, जहाँ भक्त करते पुकार।
करते दुखियों का उद्धार, सच्चे देव कहानेवाले ॥ सच्चे ॥

किसी को कष्ट है तन का, किसी को इच्छा है धन की।
किसीको पुत्रकी चाहना, आपहो सबकी सुननेवाले ॥सच्चे॥

किसी को दुष्मन का है डर, किसीको नारी का फिकर।
कोई दुष्ट देवसे भयकर, आप प्रतिपालन के करनेवाले ॥स०॥

जो तेरा पूरा रखे विश्वास, वो कभी नहीं हुआ निराश।
जब तक करता है अरदास उसको सहायता करनेवाले ॥स०॥

'अमर'की जब-जब सुनी पुकार दिये कितने ही कार्य सुधार।
अब एक और करो उपकार, भक्तको निश्चित करनेवाले ॥स०॥

॥ भजन ॥

(चाल—मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)

बाबा चरणों का दास बनालो मुझे,
बाबा सच्चा दास समझलो मुझे ॥ बाबा ॥

पहाड़ शिखर के भोमिया, इस क्षेत्र के रक्षपाल हैं।
प्रत्यक्ष परचा आपका, दुनिया में सर्व विख्यात हैं।
अपनी भक्ति की लौ में लगालो मुझे बाबा० ॥ १ ॥
जो भक्ति रखता आपकी, उस भक्त की सुनते पुकार।
हजार आनन्द छोड़कर भी पहुँचते उसके द्वार।
बाबा वैसा ही दास समझलो मुझे ॥ बाबा चरणों ॥२॥
अपराधी हूँ मैं आपका क्षमा दया भक्त पर करो।
मेरे तो रक्षक आपही, रहम अब दिल बीच धरो।
माफी देकर अब बचालो मुझे ॥ बाबा चरणों ॥३॥
घोर मुसीबत मुझ पै पड़ी कुछ आपसे छिपी नहीं।
अखत्यार है अब आपको यदि कृपा करदो सब कहीं।
ग्रह चक्कर से अब छुड़ा दो मुझे ॥ बाबा चरणों ॥४॥
मुझसे तुम्हें लाखों करोड़ों मेरे बस तू एक है।
मैं अन्य को जाचूं नहीं प्रतीज्ञा अमर की टेक है।
चाहे मारो या अब तारो मुझे ॥ बाबा चरणों ॥५॥

॥ भजन ॥

(गजल कव्वाली)

श्रीसमेतशिखर अधिष्ठायकका दुनियामें डंका बजता है।
जब पड़े भक्त पर भीड़ तभी पुकार भक्त की सुनता है॥श्री॥
जो सच्चे मन से करे ध्यावना, वो फल निश्चय पाता है।
राजा रंक का फरक न रखता सब को एक समझता है ॥श्री॥
दूर दूर से यात्री आकर चरणों में शीश नमाता है।
आफत काल में बैठ बैठ कर, मालाले ले भजता है ॥श्री॥
होली के मोके पर मेला, अद्भुत भारी लगता है।
सकल संघने दे शुख साता, सबकी रक्षा करता है ॥श्री॥
यात्रा करने निमित यात्री, विपम पहाड़ पर चढ़ता है।
भक्ति माफक पाकर शक्ति, सफल यात्रा करता है ॥श्री॥
जिसके मनमें जैसी भक्ति, वैसा फल वो पाता है।
बाबा दरबार में आकर, कभी निरास नहीं जाता है ॥श्री॥
बिना भाव का सोना चाँदी, बाबा भी ठुकराता है।
भक्ति रसके सूखे चावल, रुच-रुच भोग लगाता है ॥श्री॥
जिसके मनमें भाव नहीं वो झूठा सौदा करता है।
अपना मतलब साधन तांई, कपट बौलवा धरता है ॥श्री॥

ऐसा भक्त अन्य शरधाका, पाया पारस खोता है।
कर्महीन की यही दसा है, हाथ मसल के रोता है ॥श्री॥
आफत कालमें बैठ-बैठ दिन रात 'अमर' तो भजता है।
बाबा पर ही निश्चय रखकर, अन्य देवको तजता है ॥श्री॥

॥ भजन ॥

परम उपकारी बाबो दुखियों का दुख दूर निवारे।
मन इच्छा फल पाप दृढ़ मन निश्चय धारे। परम।
आन पड़े जब भीड़ भक्त पर तुमको यदि पुकारे।
सुनते ही टेर, न हो देर, पहोंचते पहले उसके द्वारे। परम।
होलीके मोकेपर यात्री जनका मेला लगता भारे।
कलकत्ते से श्री संघ इस उच्छव में आते सारे। परम।
पूजा सामग्री ले संग साथ, कलसों दूध ढारे।
तेल सिंदूर लगाकर अंग, बरक अजब श्रृङ्गारे। परम।
रकम रकम सुगन्ध, फूलों का हार भी धारे।
धरे मोदक मिष्टी भोग, भक्त सब न्यारे न्यारे। परम।
ले धूपदान धरे ध्यान, जोत में ज्योति पधारे।
होवे घण्टा झणकार, बजावे झांझ नगारे। परम।

मधुबन में लगे दरबार, जय जयकार उचारे।
अपने उजर कर वेश, मन में शान्ति धारे। परम ॥
उजर की अरज करोमंजूर, 'अमर' यों खड़ा पुकारे।
देवो फतेह बरदान, भक्त हो निश्चिन्त सारे। परम ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—कव्वाली)

शरणे तो आन पड़ा हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ॥
लागे भोमिया मन्दिर प्यारा, है नाम अनेक तिहारा
मैं भक्ति में उड़ता हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ॥
सम्मेत शिखर के नायक, शरणार्थियों के गायक।
तेरे द्वार आन खड़ा हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ॥
तूने कई भक्तोंको तारा, कष्ट दुख दूर निवारा।
कष्ट मैं भी पा रहा हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ॥
मैं ध्यान लगाऊँ तेरा, रहे मन भक्ति में मेरा।
गुण तेरा गा रहा हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ।
अब भक्त के कष्ट को हरना 'अमर' को अपना करना।
यही चित्त में चाह रहा हूँ, स्वीकारो या इनकारो। शरणे ॥

॥ भजन ॥

(मेरे मौला बुलाले मदीने मुझे)

मेरी अर्ज बाबाजी मंजूर करो।
मेरी अरजी पर बाबा ध्यान धरो॥

मैं बहुत सताया छट पटाया, आया हूँ तेरे द्वार पर।
सुन लीजिये मेरी दुख भरी कथा को फिर विचारकर।
मेरी विपदा को जल्दी दूर करो। मेरी अर्ज।

शिखर गिरि के भोमिया का, नाम जग मशहूर है।
जो सरधा रखता आपकी, उसका दरिद्र दूर है।
मेरी डूबती नैया को पार करो। मेरी अर्ज।

भक्ति तेरी रग रग में है पर शक्ति की दरकार है।
तन मनसे सेवा मैं करूं, मन में यही विचार है।
इतना अब अहसान करो। मेरी अर्ज।

पाप कामों से बचाना, कर विनती 'अमर' कहे,
क्रोध लालच को दूर करना, अहंकार भी दिलमें न रहे,
मेरे जीवन में कुछ सुधार करो। मेरी अर्ज।

॥ भजन ॥

देवो वरदान बाबा, बने भावना यह मेरी।

शिखर गिरि अधिष्ठायक, राजा राणा है पायक।
मैं भी बनूँ कुछ लायक, बने भावना यह मेरी। देवो।
अहङ्कार मन से हटाऊँ, कोई जीव न सताऊँ।
परधन पै न लुभाऊँ, बने भावना यह मेरी। देवो।
शब्द झूठ ना उचारूँ, सन्तोष मन में धारूँ।
क्रोध ईर्षा निवारूँ, बने भावना यह मेरी। देवो।
कपटाई दिल से छोड़ूँ, मुख न्याय से न मोड़ूँ।
सत्यता न छोड़ूँ, बने भावना यह मेरी। देवो।
झूठ स्वार्थ त्यागूँ, पर नारी देख भागूँ।
सबको प्रिय मैं लागूँ, बने भावना यह मेरी। देवो।
लोभ कभी न आवे, बने भावना यह मेरी। देवो।
सन्तों का सतसंग हो, भक्ति में मेरा रंग हो।
मनमें बड़ा उमंग हो, बने भावना यह मेरी। देवो।
दुर्भिक्ष रोग न आवे, श्रीसंघ शान्ति पावे।
अहिंसा धर्म फैलावे, बने भावना यह मेरी। देवो।

'अमर' शरण में आवे, विपदा में न घबरावे ।
सिर्फ तेरा ध्यान ध्यावे, बने भावना यह मेरी ॥देवो॥

॥ भजन ॥

मेरा भाग्य उदय हुआ आज, देवका दर्शन पायारे ।देवका॥
शिखर गिरि के भोमिया, सुख सम्पत दातार ।
हाथ जोड़ अरजी करूँ, सुनलो भक्त पुकार । देवका ॥१॥
रोम रोम में बस रहे, बस रहे नयनों बीच ।
रात दिन भूलूं नहीं, लगी कलेजे प्रीत ॥ देवका २ ॥
औरों के तो अनेक हैं, मेरे तूँ है एक ।
कहाँ जाऊँ, किसको कहूँ, करे कौन मेरी देख ॥देवका ३॥
जाचक आया जाचने, कर कर मन में आश ।
पक्की जचाई जाचना, करना नहीं निराश ॥ देवका ४ ॥
यदि प्रेम है आपका, काटो जल्दी फन्द ।
ऐसी भिक्षा दीजिये, करे भक्त आनन्द ॥ देवका ५ ॥
'अमर' करता बिनती, तेरा ही आधार ।
अन्य देव ध्यावूं नहीं, करना आप विचार ॥ देवका ६ ॥

॥ भजन ॥

(चाल—पनिहारी)

हुकुम करो तो बाबा मधुबन आऊँ, दरशन करबा हूँ थारो
बहोत दिनांसु लगन लगी है बाबा, नहीं माने अब मन
म्हारो ॥ हुकुम १॥

थारो परचो तो बाबा जग सहू जाणे, अधिष्ठायक लागे
प्यारो देश देश रा यात्री आवे, (हां थारा गुण गावे)
मनरो मिटै संकट सारो ॥ हुकुम २ ॥

रकम रकमकी लावे सामग्री, तेल सिन्दूर न्यारो न्यारो,
धूम धाम सु पूजा करावे, (हां सब मिल आवे)
मुख सुँ बोलो जयकारो ॥ हुकुम ३ ॥

'पूनम तातेड़' थारो चरणोंरो चाकर, भजनकरे हरदम थारो
'ताराचन्द' थारो साचो भगत है, हां जाणे जगत है
छोड़े नहीं 'अमर' लारो ॥ हुकुम ४ ॥

॥ भजन ॥

(चाल—शान्तिनाथ महाराज अर्ज सुन मेरी)

श्री अधिष्ठायक महाराज लाज राखो मेरी ।
दुःख दर्द निवारो देव शरन हूँ तेरी ॥टेर॥

मधुबनमें दरबार तेरा है भारी,
दर्शन करनेको आवे नर और नारी ॥
अपने मन में धर ध्यान लगावे फेरी ॥ श्री १ ॥

जो सच्चे मन से तेरी भक्ति करता,
वो आफत में किसी काल नहीं डरता ।
भक्तों की रक्षा करते आप सुन टेरी ॥ श्री २ ॥

मैं भटक भटक दरबार तेरे में आया,
सब हाल सामने आकर कह सुनाया ।
अब जल्दी करो उद्धार नहीं हो देरी ॥ श्री ३ ॥

मैंने घूम घूमकर बहोत ठोकरें खाई,
अब जल्दी लो संभाल मिटे दुखदाई ।
यो दास 'अमर' तो तेरी माला जपेरी ॥ श्री ४ ॥

॥ भजन ॥

तर्ज—भैरवी (समय प्रभात)

मैं कैसे गाऊँ बाबा तुम्हारा गुणगान ॥ टेर ॥

घूमत-घूमत मधुबन आया, बड़ी मुश्किल से दर्शन पाया,
मुझे ग्रह चक्र ने किया हैरान । मैं ॥१॥

अब भक्त दशापर करुणा लाओ, परतक्ष परचा जल्दी
बताओ, अब देना भक्तको भिक्षा दान । मैं ॥२॥

दास 'अमर' लिया तेरा शरना, कष्ट पीड़ा मेरी जल्दी
हरना, निश्चिन्त हो धरूँ तेरा ध्यान । मैं ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—गजल)

ऐसा समय हो बाबा, अरमान दिल का निकले ॥
तेरे दरबार आऊँ, परिवार संघ लाऊँ ।
उच्छव की धूम रचाऊँ, अरमान दिलका निकले ॥ ऐसा ॥
नित नई नई रचना हो, मण्डप खूब बना हो ।
बाजोंकी तान तना हो, उमंग दिलकी निकले ॥ ऐसा ॥

पूजन में सब शामिल हो, रचना मन काबिल हो ।
भक्ति में शुद्ध दिल हो, उम्मेद दिलकी निकले ॥ ऐसा ॥
सिंदूर तेल चढ़ाऊँ, कलशों दूध डलाऊँ ।
नित नये भोग लगाऊँ, उमंग दिल की निकले ॥ ऐसा ॥
अत्तर फुलेल लगाकर, पुष्पों का हार सजाकर ।
करूँ आरती बजाकर, उम्मीद दिलकी निकले ॥ ऐसा ॥
भक्ति में ध्यान होवे, दिल एक तान होवे ।
मुख तेरा नाम होवे, अरमान दिलका निकले ॥ ऐसा ॥
गिरि यात्रा पैदल हो, कमजोर में भी बल हो ।
इच्छा मेरी सफल हो, उम्मेद दिल की निकले ॥ ऐसा ॥
कोई बात बने न डरकी, होवे न चिन्ता घरकी ।
बस यही अरज 'अमर' की, अरमान दिल का निकले ॥ऐसा॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—आज हिमालय की चोटी से)

शिखगिरि का देव भोमिया, मैंने तुझे पुकारा है।
उद्धार करो उद्धार करो मेरे जीवन साथी,
भक्त को तेरा सहारा है ॥
मधुबनकी है निरमल भोमी, विकट पहाड़ किनारा है।
बीस तीर्थंकर मोक्ष गये जहाँ, वहां पर तूँ हलकारा है ॥
ऐसा तीरथ इस जगत में, समझ लेवो धर्मद्वारा है।
जो कोई भेटे सच्चे मन से, हो निश्चय निसतारा है ॥
इस पहाड़की बड़ी-बड़ी महिमा, ग्रन्थकारों ने गाई है।
सब भगवान की जगह स्थापना, अलग-अलग बताई है ॥
इस तीरथकी साल सम्भालका, लिया तेने इजारा है।
बिन होकम तेरे करे न यात्रा, लाख यत्न विचारा है ॥
इस जगह की ज्योति जागती, तूँहीं एक सितारा है।
चमक रहा है झगमग जगत में, सच्चा देव हमारा है ॥
कभी न भूले तूँ भक्त को, भक्त तुझे बड़ा प्यारा है।
सच्चे भक्तों में से एक तो 'अमर' भक्त तिहारा है ॥

तर्ज—सोंकियों में घोला जाये (प्रेम पुजारी)

शिशीयों भर तेल लाया, थाल्यों भर सिन्दूर,
तेल में सिन्दूर मिलाकर, अंत्तर ढाल्यो खूब।
होली खेलण ने थोंरे द्वार, आयों हों ॥शिशीयों भर॥

सुणियो हों में बाबा जग में, थे तो मोटा बाजा हो
भक्तोंरी नैया ने तारण, परतक्ष परचो देवो हो,
आश लिये म्हे थोंरे द्वार, आया हो ॥शिशीयों भर॥

दूर दूर सुं यात्री आवे, दुखड़ो आन सुनावे,
साचे दिल सु पूजा करनें, थोंरो परचो पावे।
काटो थे भव भवरा पाप, थे भोमियां ॥शिशीयों भर॥

"रांची मण्डल" रा टाबरिया ए, थोंसु ओ वर मांगे
जैन धर्म रो झन्डो, जग में कभी न झुकने पावे।
चरणों में शीश झुकावे बाबा थोरे ॥शिशीयों भर॥

॥ भजन ॥

(सेढल की चाल)

बावारे जैन धर्म को झण्डो ऊँचो राखे रे।
म्हारा भोमिया राज, सकल संघरो कष्ट निवारण करजेरे,
॥ म्हाराज ॥

बावारे सम्मेत शिखर री यात्रा सफल कराइजरे।
म्हारा भोमिया राज, दर्शन करवा मधुवन वेग बुलइजेरे।
॥ म्हाराज ॥

बावारे विणज वैपार में कलम सवाई राखे रे।
म्हारा भोमिया राज, टाबरीयांरीं ईड़ा पीड़ा हरजेरे॥
॥ म्हाराज ॥

बावारे नासतिक वालोंरों मन आसतिक में राखे रे।
म्हारा भोमिया राज, आसतावालों ने रस्तो आपवताईजे॥
॥ म्हाराज ॥

बावारे भक्त 'अमर' री लगन धर्म में राखे रे।
म्हारा भोमिया राज, दुख संकटमें साल संभालना राखेरे॥
॥ म्हाराज ॥

॥ भजन ॥

चालोहे सहेल्यां भोमिये बावेजी ने ध्यावण राज ।
मधुबनमें है भोमिया बावो, परतक्ष परचाधारी राज ॥
जैन धर्मरो झंडो राखे, भक्तोंरो उपकारी राज । चालो ।
बावेजीरो होकम मिलियाँ, विषम यात्रा करसां राज ।
सम्मेतशिखर रो पहाड़ है मोटो, धीरे-धीरे चढ़सांराज ।चा।
दुखियों रो दुख दूर निवारे, भीड़ पड़यां संभाले, राज ।
साचे मनरी आस्ता राख्यां, दुखसंकट सब टाले, राज ॥चा॥
बावे जी री पूजा करस्यां, रचना खूब रचासां, राज ।
रकम रकम रा फूल मँगाकर बंगलो खूब सजासां, राज ।च।
झाड़ गिलास रुसनाई करसों, ढोल मृदंग बजासां, राज ।
गाय बजाय नृत्यनाटक कर, बावेने रिझासां, राज ॥ चा ॥
टाबरियाँ री जात देसां, लुललुल धोक दरासां, राज ।
नया नया नैवेद्य मँगाकर, बावेरे चढ़ासां, राज । चालो ।
बावे आगे बोलवा करसां म्हारी आशा पूरो, राज ।
'अमरचन्द' भक्त है थारो, क्यों राखोछो दूरो, राज ।चा।
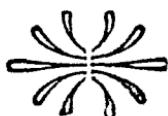
॥ भजन ॥

तर्ज—(भीनासर स्वामी अन्तरजामी)

बाबा सुनले अरजी, कर दे मरजी, भक्तों के दयाल ॥टेर॥
सम्मेत शिखर अधिष्टायक भैरों, दुनिया में विख्यात।
ज्योति जगमें जागती थारी, मेटो शोक संताप ॥बाबा॥
दूर-दूर से यात्री आवे, सुन सुन तेरो नाम।
दर्शन कर मनमें हरखावे, खिल गयो मनको राम ॥बाबा॥
महिमा थारी सब दुनियाँ में परतक्ष चमत्कार।
भक्त वत्सल के दुखसंकट को, तूँही मेटनहार ॥बाबा॥
बड़ी आशा से आवे दुनियाँ, बाबा के दरबार।
मनकी मुराद पूरी करनेका, कर जल्दी करार ॥बाबा॥
'अमर' कमर कस बैठा जमकर, करने को फरियाद।
सबको तू करता है राजी, मुझे भी दे प्रसाद ॥बाबा॥

॥ भजन ॥

मैं बावेकी भक्ति में जय जय बोलूॅ रे, मैं बावे सनमुख
आय हृदय पट खोलूँ रे ॥
मैं खोज-खोज हारयो, नहीं दूजो देव कोई पायो,
तूॅ डाल, डाल, मैं पात, पात, बिन पाये कभी न छोड़ूं रे ॥
मैं बावे की भक्तिमें जय जय बोलूॅ रे ॥ तेरी भक्ति में चित्त
लगाकर डोलूँ रे ॥ मैं भटक भटक दर्शन थारा टंटोलूँ रे ॥
मैं बावे की भक्ति में० ॥
थारी मन में रटन लगाऊॅ, किस बिध 'अमर' कहे पाऊँ
तूँ तज तज, मैं भज भज, बिन पाये कभी न छोड़ूं रे ॥
मैं बावेकी भक्ति में जय जय बोलूँ रे ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज – नेमजीकी जान बनी भारी)

(दोहा)

शिखरगिरि भोमिया जयकारी, ध्यावना रखते नरनारी ।
भक्त जन दर्शनको आवे, दर्शन कर मनमें सुख पावे ॥
ध्यावना थारी मन ध्यावे, भावना अपने मन भावे ॥

(दोहा)

श्री अधिष्ठायक देवकी, महिमा जग विख्यात।
मधुवनमें बड़ वृक्षके नीचे, [प्रकट भये साक्षात ॥
जगतमें परचा है भारी शिखरगिरि भोमिया [जयकारी ॥१॥
मूरत बावेकी है प्यारी, मुकुट मस्तक छत्र धारी।
कसूंमल वागा हितकारी, वरग से अंगिया शृंगारी।

(दोहा)

त्रिशूल हाथ में चमकता, घुघुरुकी झनकार।
स्वान वान रहे संग साथमें, दुष्टको दे ललकार ॥
कॉपते भूत-प्रेत स्यारी, शिखरगिरि भोमिया जयकारी ॥२॥
शिखरगिरि धाम है प्यारा, मोक्ष गये बीस अवतार।
भेटिया होवे निस्तारा, कर्मका कट जाय भार।

(दोहा)

ऐसे मोटे धाम की, करता है रखवाल।
कभी कोई संकट पड़े, करे रक्षा तत्काल ॥
पहाड़काहै तूं अधिकारी, शिखरगिरि भोमिया जयकारी।३।
किया तैने कितना उपकार, भूल जाते हैं सब गॅवारा।
पड़े जब फिर कभी दरकार, दौड़ करने आते पुकारा ॥

(दोहा)

तूँ है बसमें भक्तके, जो रखे पूर्ण विश्वास,
उसको डर फिर कुछ नहीं निशंक करे निवास ।
दूर कर 'अमर' की लाचारी,
शिखर गिरि भोमिया जयकारी ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—थारी गई रे अनादि, नींद जरा टुक जोवो तो सही)

थारी लेई रे शरण अधिष्ठायक भैरूँ, बोलो तो सही ।
बोलो तो सही, मेरे बाबा बोलो तो सही ॥ थारी ॥
ढूँढत ढूँढत आयो द्वार पर, बोलो तो सही ।
मेरी सरधा भक्ती जाँच काँटमें तोलो तो सही ॥थारी॥
कर पूरी पहिचान नजर जरा, खोलो तो सही ।
कौन भक्त कैसा है नाड़ी, टटोलो तो सही ॥ थारी ॥
बड़ी आश कर आया द्वार पर, सुनलो तो सही ।
मेरे मनमें क्या है विचार उसे, समझो तो सही ॥थारी॥

'अमर' आश लगाये बैठा, बोलो तो सही ।
मेरे जहरीले हृदय में अमृत, घोलो तो सही ॥ थारी ॥

॥ भजन ॥
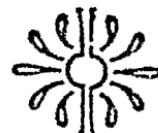
(तर्ज—बिछड़े री घाली पीवर चाली हो)

सम्मेत शिखर यात्रा की मन में आवे हो भोमिया ॥
तारनवालो डूँगरियो, सरावण वालो डूँगरिया ॥
इसी पहाड़ पर बीस तीर्थंकर सीज्या हो, भोमिया ॥तारन॥
इसी तीरथकी महिमा ग्रन्थों में गाई हो, भोमिया ॥तारन॥
थारी आशा सुँ सफल यात्रा करता हो, भोमिया ॥तारन॥
विघनबाधामें थारो समरण करता हो, भोमिया ॥तारन॥
थारीदेवपुरीसु 'अमर' नेखवस्यांभेजे हो भोमिया ॥तारन॥
श्री जैनधर्म रो झण्डो उँचो राखो हो भोमिया ॥तारन॥

॥ भजन ॥

बतादे तूँ मुझे बाबा, तुझे मैं किस तरह पाउँ ।
कहाँ पर बास है तेरा, कहाँ पर ढूँढने जाउँ ॥ बतादे ॥
नहीं कोई कण है ऐसा, जहाँ पर तूँ न सुनता हो ॥
मुझे मिलजाओ अब बाबा, वृथा कहाँ भटकने जाउँ ॥बतादे॥
तेरा दोषी सरासर हूँ, इसीलिये भय मुझे लगता ।
कौन सी भेट लाकर अब, कौन रास्ते रिझाउँ ॥बतादे॥
नहीं मेरे भेट नहीं पूजा, नहीं मेरे त्याग नियम ।
सिरफ भक्ति है दिलके अन्दर, कलेजे बीच बिठाउँ ॥बतादे॥
जरा राजी हो प्रसादी, मोमिया दे दो अब ऐसी ।
'अमर' कहे मैं जीवन अपना, बैठ सुखमय
बिताउँ ॥ बतादे ॥

(तर्ज—तुमतो भले विराजो जी, सांवलिया पार्श्वनाथ०)

म्हेतो दर्शन पायाजी, म्हेतो दर्शन पाया जी ॥

सम्मेत शिखर अधिष्ठायक थारा दर्शन पायाजी ॥

ढूँढ़ ढूँढ़ मधुबनमें आकर देख्यो रूप तिहारो (बाबा)
अजब मूरती बड़ी विलक्षण, सफल हुयो जमारो
॥ म्हेतो दर्शन० ॥

शिखर गिरि की तलहटी पर, थारो है दरबार । (बाबा)
पार्श्व पहाड़ को कोटवाल है, तूँ है पहरेदार
॥ म्हेतो दर्शन० ॥

हाथो हाथ परचो है थारो, जो ध्यावै सो पावे ॥बाबा॥
जिसके मन में नहीं भावना, वो वंचित रह जावे
॥ म्हेतो दर्शन० ॥

नरनारी मिल अरजी करने, आवे, थारे पास ॥ बाबा ॥
सकल संघ ने दो सुख शान्ति, "अमर" करे अरदास
॥ म्हेतो दर्शन० ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—तुम तो भले विराजे जी श्री सांवलिया)

तुमतो डरते रहना जी, श्री भोमिया बाबाकी अशातना
कभी न करना जी।

मनमें शंका कभी न करना, मत करना अभिमान (भइया)
हाथों हाथ मिलेगा परचा, कर देखो पहचान
॥ तुम तो डरते० ॥

भावना हो तो भक्ति करना, तरक मत लगाना (भइया)
करे उसी पर लांछन दे क्यों, सोता शेर जगाना
॥ तुम तो डरते० ॥

दोप किये से दंड मिलेगा आकर मांगो माफी (भइया)
छोटे मोटेकी खातरी, करगे बात इन्साफी। तुमतो०।
समकित धारी देव है साँचो, रक्षा सबकी करता,—भइया
अचानक अड़चनके माहिं 'अमर' बैठ समरता ॥तुमतो०॥

॥ भजन ॥
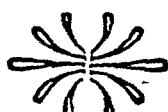
(तर्ज—पंछी बावरिया)

भैरूँ भोमिया, भक्तिका रास्ता बता दे ।।रे भैरूँ भोमिया
शूलको फूल बना दे, रे चलना जल्दीका ।
भक्तिका रस्ता बता दे, रे भैरूँ भोमिया ।
सहायक साथी बनकर आजा, बाबा भोमिया रस्ता बताजा
सिर का बोझ उतार, रे भैरूँ भोमिया ।। भक्तिका ।।
तेरे काठियोंने रस्ता रोका, नीचे गिरा खड्ढे में झोका ॥
जीवन जल्दी सुधर रे भैरूँ भोमिया ।। भक्तिका ।।
नहीं चाहना कुटुम्ब या धनकी देखूँ न लीला दुख जीवनकी
ज्ञान हृदय लग जाय, रे भैरूँ भोमिया । भक्ति का ।।
भक्ति रसका पान करावो, मनसे अज्ञानता दूर हटावो
लो अर्ज "अमर" स्वीकार रे भोमिया ।। भक्तिका ।।

॥ भजन ॥

(तर्ज—होई आनन्द बहार रे प्रभू बैठे मगन में

भोमिया बाबे से कामरे, आयो हाल सुनाने ॥
हाल सुनाने, बात बताने ॥ भोमिया० ॥

तेरे काठिया पीछे पड़या है, बणे नहीं धर्म ध्यान रे
॥ आयो हाल सुनाने ॥

हर घड़ी हर पल रहे चिन्त्या, मिटनेका करो इन्तजाम रे
॥ आयो० ॥

पुण्यजोग पहुँच्यो तुम निकटे, सिद्ध करो मेरा काम रे
॥ आयो० ॥

सदा शान्ति रहे मन मेरे, इतना सा माँगू दान रे
॥ आयो० ॥

तूँ दाता परतक्ष विधाता, दीप रहो जग नाम रे
॥ आयो० ॥

'अमर' अर्ज करे कर जोड़ी, दो हृदय विच ज्ञान रे
॥ आयो० ॥

(तर्ज—मेरा नाम है चमेली)

जरा सुणलो बाबा मोरी थे तो मनरी पुकार,
मैं तो आयो थोरे द्वार बड़ी दूर से,
मैं तो सुणियो हो ओ बाबा, थे तो भक्तों रा रखवाला
लिये आश मैं तो बैठा थोरे द्वार में,
तेल में सिन्दूर मिलाकर थोरे उपर ढालोला,
वर्गां सू अंगियाँ थोरी मैं तो खूब रचावोंला,
रे हिवड़े हार मोतियन रो मैं तो पेरावोला,
मैं थोरा चेला हो बाबा थे मोरा रखवाला,
जरा सुणलो बाबा······।।

होली उपर बाबा थोरो मेलो भारी लागे हो,
होली थो संग खेलन बाबा सारा छोड़ने आवे हो,
होली खेलन अे तो पाप धोवण.ने,
मैं थोंरा चेला हो बाबा थे मोरा रखवाला,
जरा सुणलो बाबा······।।

रोंची मण्डल रा टाबरिया अे थोरे द्वारे आया हो,
चरणों में थोरे बाबा अे तो शिश झुकावे हो,
शिश झुकावे अे तो थोरा गुण गावे हो,
मैं थोरा चेला हों बाबा, थे मोरा रखवाला।
जरा सुनलो बाबा·····।।

॥ भजन ॥

(तर्ज—जब तुम्ही चले परदेश लगाकर ठेस)

अब जल्दी करो स्वीकार, 'अमर'की पुकार, हो भोमिया
प्यारा तीरथ का करो सुधार ॥
तूँ पार्श्व पहाड़की रक्षा करता, निरभय यात्री बनबन फिरता
करके दर्शन भगवान, हो हर्ष अपारा, तीर्थका करो सुधारा
॥ अब जल्दी करो० ॥
टोंक पार्श्वनाथ कोसों चमके, नाम बद्रीदास जगमें रमके।
होवेली टोंक का कैसे जीर्ण उद्धारा, तीरथ का करो सुधारा
॥ अब जल्दी करो० ॥
क्यों रहे तीरथमें कुछ त्रुटि जहाँ आप हाथ लिये डियुटी
हम जाग चुके, अब दो हिम्मत सहारा, तीरथ का करो
सुधारा ॥ अब जल्दी करो० ॥
संभाल करे श्रीसंघ मनसे, मिल करे परिश्रम तन धनसे
अब देखूँ कब हो 'पूनम' का विचारा तीरथ का करो
सुधारा ॥ अब जल्दी करो० ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—जब तुम्ही च.ले परदेश लगाकर ठेस)

अब तुम्हीं करो त्रसकार, लगाकर प्यार हो देव हमारा
तुमरे बिन कौन सहारा ॥

तूँ शिखरगिरीका देव बड़ा, विख्यात भोमिया नाम पड़ा,
तेरी चमत्कारका बजता जग नगारा, तुमरे बिन कौन०

भक्तोंसे परतक्ष तूँ मिलता, पहचान पता कुछ नहीं चलता,
धरता रूप अनेक चकाचौंधारा, तुमरे बिन कौन सहारा ॥

संकट में समरन भक्त करे, आँखों में आँसू रुदन झरे,
विश्वास तेरे पर रखता अटल अपारा, तुमरे बिन कौन०

क्षण-क्षणमें मन मधुवन जावे, तत्क्षण मूरत बन खिच आवे,
पर मिले नहीं हांकारा या नाकारा, तुमरे बिन कौन०

कर.तपा परीक्षा तूँ करले, जबतक हांमी तूँ नहीं भरले,
नहीं थके 'अमर' घूमाता रह सौबारा, तुमरे बिन कौन
सहारा ॥ जब तुम्हीं करो त्रसकार० ॥

(तर्ज—ताश के बावन पत्ते)

बाबा थोने ध्यावों थोरा ही गुण गावों,
सिखरगिरी रा बाबा थोरा परचा बड़ा भारी।
थे भक्तो रा साचा रखवाला—
डुबी नाव तिरावन वाला—
थोरे द्वारे जो भी आवे खाली हाथ न जावे,
पूरी होवे मन री आशा जो भी थोने ध्यावे,
भक्तो री जिवन नैया ने थे ही पार लगावो,
थे भक्तो रा साचा रखवाला.......
दूर दूर सू चेला थोरा, तेल सींन्दूर ले आवे,
फागुन री पुनम ने होली, थोरे साथे खेलें,
छोटा मोटा सब मिलने अे, तेल सिन्दूर चढ़ावे,
थे भक्तो रा साचा.......
राँची मंडल रा टाबरिया अे आया थोरे द्वारे.......
अर्जी मोरी सुणलो बाबा चरणों शीस झुकावे.......
मेहर थोड़ी कर दोनी बाबा थोरा ही गुण गावे...
थे भक्तों रा.......................
डूबी नाव तिरावन वाला।

भजन पिल्लू चिला

(तर्ज—श्री अर्हन स्वामी मेरे)

सुन भोमिया बाबा मेरे, दुख मेरा मिटाना रे,
कीरत तेरी जग चमके, मुझे राह बताना ॥ सुन भो०
मेरे पाप बड़ा है पीछे, इसको हटाना रे,
मेरा हृदय ज्ञानसे भरना, व्यसनोंसे बचाना ॥ सुन भो० ॥
मैं जीवन वृथा गंवाया, नहीं धर्म पहिचाना रे,
अब कैसे हो छुटकारा, रस्ता दिखाना रे ॥ सुन भो० ॥
मन के झंझट झमेले, इसको मिटाना रे।
फिर शांति से करूँ भक्ति, युक्ति, बताना रे ॥सुन भो०॥
तूँ देव है समकित धारी शक्ति बलवाना रे,
तेरी पहुँच बड़ी है ऊँची ये 'अमर' ने जाना ॥सुन भो०॥

भजन राग सोरठा

(तर्ज—कुवजाने जादू डारा)

सबके मन हर्ष अपारा रे, खेलें होरी भोमिया द्वारा ॥
कलकत्ते से सब संघ मिलकर, आवे मधुबन सारा ।
धूम-धाम से करते पूजा, दे दे दूध की धारा रे ॥ खेलें ॥
तड़के उठ सब चढ़ते पहाड़ पर, रस्ता कठिन कर पारा ।
साहरो देवे बाबा भोमियो पहुँचे कुशल कतारारे ॥ खेलें ॥
केई दानी दे दान अनेकों, शुद्ध भाव विचारा ।
केई भावना भावे मन में, धन्य दानी परिवारा ॥ खेलें ॥
सम्मेत शिखर तीर्थ है मोटो, सीजे बीस अवतारा ।
जो नरनारी करे यात्रा, निश्चय हो भव पारा रे ॥ खेलें ॥
श्री अधिष्ठायक बाबो भोमियो है तीरथ हलकारा ।
सकल संघ ने शांति देवे, करता 'अमर' पुकारा रे ॥खेलें॥

(तर्ज—सावन का महिना)

फागुन रों महिनो, थोरो मेलो लाग्यो भारी,
दुर दुर सु दर्शन करने आवे है नर नारी ।

बीच भवँर में है नैया मोरी,
पार करो थे बाबा करो ना देरी,
मोरी आ नैया रा, थे ही हो खेवन हारा,
दुर दुर सुरे...... ॥

अजब रकम है मुखड़ो थोरो
दुःख हर जावे बाबा दर्शन करयाँ थोरो,
मनरी पुकार मोरी सुनलो थे आज,
दुर दुर सुरे...... ॥

राँची नगरा रा अे टावर आया,
चरणों में थोरे, बाबा शिश झुकाया,
मनरी पुकार मोरी सुनलो थे आज,
दुर दुर सुरे...... ॥

॥ भजन ॥

कहाँ ढूँढत है प्यारे, भइया कहां ढूँढत है प्यारे ॥
बाबो है पास में थारे ॥ भइया कहाँ ॥
ना तीरथ में, ना मूरत में ना है पहाड़ किनारे ॥

ना है जपमें, ना है तप में, ढूंढ ढूंढ जग सारे ॥ (भइया)
कहाँ ढूंढत है प्यारे ॥
'अमर' कहे अधिष्ठायक बाबो, नजर सामने थारे ॥
पूरन है विश्वास जिस मन हाजर उसी के द्वारे ॥
भइया कहाँ ढूंढत है प्यारे ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—मुझे राम से कोई मिला दे)

मुझे बाबा से कोई मिला दे ।
भटकत भटकत बहुदिन बीते, कोई संदेशा पहुंचा दे ।मुझे०।
कोई कहे चमत्कारी भोमिया, कोई कहे ये अधिष्ठायक हैं ॥
कोई कहे चमत्कार भैरो, कोई कहे ये सहायक हैं ॥
एक रूप का अनेक नाम है, सच्चा रूप दिखा दे ॥मुझे॥
कोई कहे शिखरजी पहाड़ में, कोई कहे रहे मधुबन में ॥
बिना ज्ञान का निकला अन्धा, किसे कहुं मुझे सहारा दे ।
किसे कहूँ मुझे आय बचाओ, किसे कहूँ मेरा प्यारा ये ।
'अमर' कहे मैं ध्यान लगाऊँ भक्तको जल्द बचादे । मुझे ।

॥ भजन ॥

(वैराग्य भावना)

बाबा बाबा मैं पुकारूँ तेरे दर के सामने ।
मेरे घट बिच घर लिया है, बाबा तेरे नामने ॥
मेरा जीवन हाथ तुम्हारे, सौंप दिया भगवान ॥बाबा॥

सम्मेत शिखर के भोमिया का, नाम जग विख्यात है ।
चमत्कारी देव समकित प्रतक्ष है वर्तमान में ॥ बाबा ॥

शुभ कर्म के जोग बाबा, तूँ मुझे साथी मिला ।
मेरा 'मन' सुधार अब तूँ, आया तेरे सामने ॥ बाबा ॥

"मन" बड़ा है पापी लुच्चा, पाप करता न डरे ॥
क्या-क्या अनरथ 'मन' कीया है खोलूं तेरे सामने ॥बाबा॥

हिंसा चोरी झूठ मैथुन—धन के मोह मन मस्त है ॥
क्रोध कपट रखता घमण्ड-करे निन्दा परके सामने ॥बाबा॥

लोभ त्रषणा न बुझे "मन" सात समुद्र खोजता ।
राग द्वेष जीवन बिगाड़ा-मेरे "मन" हरामने ॥ बाबा ॥

किसी की चुगली किसीको ठगना, किसीको कुछ कलंक दे
कैसा-कैसा पाप किया है-मेरे 'मन' बेइमानने ॥ बाबा ॥

बुद्धि दो बाबा ऐसी 'मन' सदाचारी बने ॥
'मन' को रस्ते जल्दी लावो, बाधा न पड़े धर्म ध्यान में ।बाबा॥
सदाचार का मान जगतमें, करते देवी देवता ॥
इसीलिए तो मैं भी अरजी, करता तेरे सामने ॥ बाबा ॥
दया रहे घट बीच मेरे—सत्य वचन अटल रहे ।
क्षमा विनय सन्तोष भावना मेरे 'मन' घर करे ॥ बाबा ॥
धन का भूखा धन माँगता पुत्र का भूखा पुत्र को ॥
रोगी अपने रोग मिटन को कहता तेरे सामने ॥ बाबा ॥
'अमरचन्द' की यही माँगणा, सबका मन सुधार दो ।
छूटजाय सब पाप करना, लगन लगे भगवान में ॥ बाबा ॥
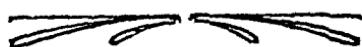
॥ भजन ॥

सम्मेत शिखर अधिष्ठायक मेरी भर दे झोली ।
भर दे झोली—मेरी तूँ भर दे झोली ॥ सम्मेत ॥
खड़ा भक्त भिक्षा को लेने, दर्द लगा है आया कहने,
हृदय पीड़ा मेरी समझ, रोग की दे दे गोली ॥ सम्मेत ॥

मालिक मेरा तू है सच्चा, मैं तेरा हूँ बालक बच्चा।
मन की थैली खोल, गाँठको करदे पोली ॥ सम्मेत ॥
मनकी बातें तुझे सुनाऊँ, रूठे हुएको तुम्हें मनाऊँ।
सोच-समझ कर दे दे भिक्षा, होवे अनमोली ॥ सम्मेत ॥
क्यों ज्यादा अब देर लगावे खड़ा-खड़ा भक्त तरसावे।

॥ भजन ॥

मेरी नइया डूबी जाय, जल्दी तूँ आरे खेवटिया ॥
शिखर गिरि के भोमिया, मेरा करो उद्धार।
रुदन स्वर विनती करूँ, जहाँ हो सुनो पुकार ॥ जल्द ॥
सिर पर आफत आ गई, तन काँपा मेरा जाय।
कैसे बचूं इस कष्ट से, दीखत नहीं उपाय ॥ जल्द ॥
कोई किसी का भक्त है, कोई किसी का देव।
मैं तो तेरा भक्त हूँ, तूँ ही मेरा देव ॥ जल्द ॥
यदि ये नइया डूब गई तो होगा मेरा बेहाल।
पीछे आकर 'अमर' कहे, करेगा क्या संभाल ॥ जल्द ॥

॥ भजन ॥

जीवन मेरा सब सौंप दिया, अधिष्ठायक तुमरे हाथों में ।
सुख-दुख देना अब है निरभर, अधिष्ठायक तुमरे हाथोंमें ।
मैं तुमको कभी न भजता, फिर भी तू मुझे नहीं तजता ॥
अपकार है मेरे हाथों में, संसार तुम्हारे हाथोंमें ॥जीवन॥
मुझमें तुझमें है भेद बहुत, मैं नर हूँ तुम नरनायक है ।
मैं संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में ॥जीवन॥
भक्त के आंसू पोछन को, जदकद मधुबन से तू आता ।
पुकार 'अमर' के हाथों में उद्धार तुम्हारे हाथों में ॥जी०॥

॥ भजन ॥

तारो तारो तुम देव भोमिया मधुबन के सरदार ।
बड़ वृक्ष दोनों पास में अरु, बीच तेरा दरबार ॥
दिन भर श्रावक पूजन आवे, रहती अजब बहार ॥तारो १॥
दूर देश से दर्शन करने, आयो तेरे द्वार ।
अर्ज सुनो मुझ दीन बालककी, विनवुं बारम्बार ॥तारो २॥
शरण तुम्हारी लीनी बाबा तुमही तारण हार ।
नइया भवसागर में अटकी, आन लगावो पार ॥तारो ३॥
तूँ मनमोहन मालिक मेरा, शरणे राखण हार ।
तूं है नायक तूं है सहायक 'पुनम' का आधार । तारो ४॥

॥ भजन ॥

(चाल—दुनियाँ रंगरंगीली बावा)

मुशकिलकी जिन्दगानी, (बावा) मुशकिलकी जिन्दगानी ।
प्रतक्ष देव है तूँ दुनिया में चमत्कार तेरा सब जाने ।
सम्मेत शिखर के भोमियाका, जगमें नाम सब पहिचाने ।
मैं आया हूँ अरजी करने, सुनलो मेरी कहानी ॥बा० मुश॥
कभी दुखी हूँ धन दौलत से कभी दुखी कुटुम्ब परिवार ।
कभी दुखी काया पीड़ा से, कभी दुखी दुश्मन है लार ।
मेरा दुख अब जल्दी मिटाओ बनूं तेरा ध्यानो ॥बा० मुश॥
कभी क्रोधसे कर्मबन्धे मेरे, कभी घमण्ड कभी कपटाई ।
लोभ वृत्ति खोटी पड़ी ऐसी, लूट लाऊँ पाई पाई ।
पाप का रस्ता जल्दी छुड़ाओ, बनूं थोड़ा दानी ॥बा० मुश॥
मेरा 'मन' है महा निकम्मा, परकी जा निन्दा करता ।
दुनियाँ भर से करे ठगाई, द्वेष भाव से नहीं डरता ।
मेरे 'मन' को रस्ते लावो, रहे न शतानी ॥बा० मुश॥
कर्म काठिये बाधा देते, होता नहीं जप-तप अरु दान ।
क्या दशा होगी 'अमर' की बतलावो मेरे भगवान ।
मुझ अन्धेकी आँख खोल दो, बनूं मै झट ज्ञानी ।बा० मु।

॥ भजन ॥

(तर्ज—देखो जी बदरबा छाये प्रीतम नहीं आये)

देखो-देखो जी, (हाँ देखो-देखो जी) भक्त जन आये,
क्यों न मुस्कराये ॥

मधुबन का सरताज भोमिया, डंका जग बजाये ।
भटकत-भटकत तेरा दर्शन, कर्मयोग से पाये ॥ देखो ॥

तेरी भक्ति करती दुनियाँ तेरा ध्यान लगाये ।
मैने भी यह मनमें ठानी, बैठा धूणि रमाये ॥ देखो ॥

मात पिता की गोद में बालक दौड़ा दौड़ा जाये ।
सब गुनाह वो माफी करदे, अपनी गोद बिठाये ॥देखो॥

तेरी मेरी प्रीत पुरानी, कौन याद दिलाये ।
मेरे जैसे लाखों-करोड़ों कौन हिसाब लगाये ॥ देखो ॥

क्या है मन में क्या है तनमें मुख से कहा न जाये ।
'अमर' के समर का सच्चा मतलब, कौन आय समझाये॥देखो॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—अब तेरे सिवा कौन मेरा कृष्ण कन्हईया)

अब तेरे शिवा कौन मेरा कष्ट कटइया ।
बिगड़ी दशा सुधार मेरी डुबती नईया ॥
ओ मधुवन के सरदार मैंने शरण तेरी ली ।
भोमिया बाबा जी तूंने बड़ी देर की ॥
मेरी डुबती नइया का आकर बनो खेवइया ॥अब तेरे॥
किस भव का ये पाप मेरे उदय में आया ।
जो सुख की नींद सोते को आन जगाया ।
करुणा पुकार सुन कह दे लाज बचइया ॥अब तेरे॥
इस वक्त मुझे आँख से कुछ सुझता नहीं ।
उलटे रस्ते जाने पर कोई टोकता नहीं ॥
दुनियाँ में अब है तो एक तूँही रखइया ॥अब तेरे॥
तूँ जिधर हाँक देगा मुझे मै उधर ही जाऊँगा ।
पर बांह पकड़े बिन कैसे रास्ता पाऊँगा ॥
पल पलमें करता याद 'अमर' जोत जगइया ॥अब तेरे॥

॥ भजन ॥

(चाल—जिन्दगी है प्यार की प्यार में बितायेजा)

समकित धारी भोमिया, तूँ धर्म को दीपायेजा।
शिखर गिरि के तीरथ की, तूँ शान को बढ़ायेजा॥
मधुबन का सरताज है भक्तों पर राज है।
राजको चलायेजा, भक्तों को बुलायेजा॥ समकित॥
भक्त तेरे अनेक हैं, तूँ भक्तों का एक है।
भक्ति के अनुसार बाबा, प्रेम रस पिलायेजा॥
(भक्तिदान दिलायेजा)॥ समकित धारी भोमिया॥
तूँ अगरचे रुष्ट हो, भक्त पै पड़ा कष्ट हो।
तो कष्ट को मिटायेजा, भक्त को चेतायेजा॥समकित॥
तूँ परतक्ष जग में देव है, भक्तों का आधार है।
सहारा देकर भक्तों का हौसला बढ़ायेजा॥
(वीर पाठ पढ़ायेजा) ॥समकित॥
बाबा की कचहरी में, दावा 'अमर' पेश किया।
आशीर्वाद देकर अपने, फर्ज को निभायेजा॥
फैसला सुनायेजा, धर्म फल बतायेजा॥समकित॥

॥ भजन ॥

संसार में यदि ऐसा देव ढूँढ़ न पाते ।
दुखदर्दकी कहानी कहो किसे सुनाते (कहो किसे सुनाते)॥
सम्मेत शिखर का, भोमिया, हमें देव मिल गया ।
इस देव की महिमा का हमें पता चल गया ।
अन्धे की बाँह पकड़ कर, रस्ता बताते ।
डूबते हुए को सहारा देकर बचाते ॥ (हाँ देकर बचाते) ॥
॥ संसार ॥

वर्णन चन्द्रशेखर राज के, वक्त में आया ।
गुरु वीर विजय जी, वर्णन राश में गाया ।
प्रमाण मुद्दत पहिले का, ग्रन्थ दिखाते ।
बड़वृक्ष नीचे स्थापना, होना बताते ॥ संसार ॥
हजारों चमत्कारी इनकी भक्तों ने देखी ।
हर मौके पर सहायता, इस बावे ही ने की ॥
इन जागती ज्योति को, हम कैसे भुलाते ।
प्रतक्ष प्रमाण सामने, सिद्ध कर जो दिखाते ॥ संसार ॥
सवाल पेश करने का, हर वक्त अधिकारी ।
पुकार 'अमर' की तो, हर समय स्वीकारी ॥

उलझी हुई उलझनको, आसानी से सुलझाते ।
जो सच्ची भक्ति द्वारा, बाबाजी को अपनाते—
(हाँ बाबाजी को अपनाते) ॥संसार॥

खमा ओ खमा खमाभोमिये बावे ने

खमा ओ खमा खमा भोमिये बावे ने,
खमा ओ खमा खमा मधुबन रे सरदार ने,
थोने तो ध्यावे आखो मारबाड़ हो,
आखो गुजरात हो,
खमा ओ खमा ॥

सम्मेत शिखर रा अधिष्ठायक,
मधुबन रा रखवाला,
मधुवन री नाव खेवैया हो - हो,
खमा हो खमा ॥

दुर दुर सू चेला थोरा, दर्शन करवा आवे हो,
साचे दिल सू पुजा करने, परतक्ष्य परचा पावे हो,
आश न ईयाॅ री खाली जावे हो........
खमा हो खमा ॥

होली उपर बाबा थांरो, मेलो भारी लागे हो,
होली थां संग खेलन बाबा लारा छोड़ने आवे हो,
मनड़े रा पाप धोने आवे हो............
खमा हो खमा ॥

रॉची मंडल रा टाबरिया अे थांरे द्वारे आया हो,
'प्रेम' संग थांरी भक्ती करने थांरा परचा पावे हो,
टाबरियों ने ठंडा झोला दिजो हो.........
खमा हो खमा ॥

॥ भजन ॥

बाबा भोमिया बता, मैंने क्या बिगाड़ा तेरा ।
सब घर में देता रोशनी, मेरे घर क्यों अंधेरा ॥
सूरज भी प्रकाश, सबको देता है समान ।
तूं क्यों रखता भेद भक्तमें, करके भी पहिचान ॥
तेरे हैं इकसार सब, पान पंचसेरा ॥ बाबा भो० ॥
मेरे सुख के दिन थे, वो करमों ने झोंप लिया ।
एक दुख भरी झनकार, बदले में सौंप दिया ।
दुनियाँ तो देखें दिवाली, मैं देखूं ससेरा ॥ बाबा भो० ॥

मैं भटकता भटकता, तेरे द्वार पै आया ।
जो दर्द दिल में था वो रत्ती भर न छिपाया ।
मान चाहे न मान, करूँगा सौफेरा ॥ बाबा भो० ॥
किया अबतक न विचार, अपने भक्त जनका ।
दया आती है या नहीं, तूँ समझ तेरे मन का ।
अब कहना है सो कह, तोड़ आड़का घेरा ॥ बाबा भो०॥
पिता के सामने पुत्र, करता है कसूर ।
होता गुनाह है माफ, आखिरकार में जरूर ॥
माफी देकर जल्दी कर दे, फैसला मेरा ॥ बाबा भो० ॥
कहे न लोग मुझको, गया कहाँ देव प्यार ।
ऐसा न करना कभी जो, हँसी करे संसार ।
रात हो अन्धेरी, पर दिखादे सवेरा ॥ बाबा भो० ॥
जीवन साथी करके, छोड़ सकता हूँ कहीं ।
शरीर से रहता अलग, पर मन से नहीं ।
तेरे बिन सूना है, 'अमर' का सवेरा ॥ बाबा भो० ॥

(तर्ज—राजस्थानी लोकगीत (पीपळी)
(बायां चढ़् याछां भँवरजी पीपलीजी)

आय पड़्यों हूँ मैं थारे आसरजी, ओजी म्हारा मधुवन का सिरदार, एक वेर बाबा दर्शन दीजियो जी, हॉजी म्हारा शिखर गिरि रा रखवाल, था विन बाबा घड़ी मने आवडजी। औजी म्हारा भक्तां रा आधार, एक वेर बाबा दर्शन दीजियोजी। आय......

कुण थाने बाबा मधुवन भेजियाजी, हॉजी बाबा कुण थाने करया रखवाल, कुणाजी रे हुकमा मधुवन आवियाजी। ओजी म्हारे हिवड़े रा, नौसर हार। थाविन बाबा घड़ी मने आवडजी। आय......

पास प्रभुजी। म्हाना मधुबन भेजियाजी। हांजी म्हेतो करा तीर्थ री रखवाल, उणाजीरे हुकमा मधुबन आवियाजी॥ हांजी थाने 'विमल' कर फरियाद एक वेर बाबा दर्श दीजियोजी। औजी म्हारी पूरो मनडरी आश। एक वेर बाबा दर्शन दीजियोजी॥ आय·····

॥ भजन ॥

मनवा भोमिया मन्दिर चल ।
भूखेको भोजन, अन्धेको अखियां, प्यासेको मिलता जल ।
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

शिखर गिरिका पहाड़ भेटकर, कर काया निरमल ।
भक्ती भाव से यात्रा करियां, होय जनम सफल ॥
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

रतन छोड़ क्यों कंकर ढूंढ़े, पाकर देव असल ।
दुनियाँ भरकी खाक छान ले, मिलसी अदल बदल ॥
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

चलूँगा-चलूँगा करतां-करतां, जायगा साँस निकल ।
सिरके झंझट तभी छूटसी, पड़ेगा जाय जंगल ॥
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

पापी मनुष्य पहुंचे यदि आकर, बुद्धि जाय बदल ।
ऐसी चमतकार दर्शन में, क्यों करता कल कल ॥
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

अन्ध ज्ञान ने हुवा सो हुआ, अब भी कुछ संभल ।
'अमर' समर करता बाबा का, हर घड़ी हर पल ॥
॥ मनवा भोमिया मन्दिर चल ॥

॥ भजन ॥

बाबा दो ऐसा वरदान, मुझे मेरा स्वपना सच हो जाय।
एकदिन मैंने देखा स्वपना, कहता हूँ सुनो हाल मैं अपना।
सब परिवारको लेकर संघमें, रहा हूँ उच्छव मनाया ॥
॥ बाबा ॥

बड़े ठाठ पूजा सामग्री सब मिलकर रचना अङ्गमें करी।
कलशों कलशों दूध की धारा, रहे सब बरसाय ॥
॥ बाबा ॥

नया नया नैवेद्य मंगाया, अलग-अलग सब कोई चढ़ाया।
फल फलिहारी बाबे सन्मुख, रख दिया सब सजाय ॥
॥ बाबा ॥

मिल नरनारी बैठे मण्डप, बजने लगे बाजे धप-धप।
ताल स्वरों की भक्ति सुन-सुन, हरख रही समुदाय ॥
॥ बाबा ॥

जोर-जोरकी हुई जयकारें, आरती मिल-मिल आय उतारें।
घण्टाके झनकार से दिया, मन्दिर सब गुँजाय ॥ बाबा ॥
निरमोहि स्वपना टूटा मेरा, न कोई उच्छव हुआ सवेरा।
अबकब निकले अरमान 'अमर' का, स्वपना सच हो जाय ॥
॥ बाबा ॥

धन्य भाग्य हमारा दर्शन कीना है बाबा आपका ॥धन्य॥
साल छयानवे फागुन महीना सुदि आठम सुखकारा।
यात्राकरण शिखर गिरि चाल्यो संग सहु परिवाररे।धन्य।
तीन बजे तड़के दशमी दिन पहाड़ चढ़न शुरू कीना।
बरषा हुई बरफ पत्थरकी, ओलिया पत्थरकी नारे।धन्य।
आध कोस झोपड़ा आई मानता याद कराया॥
सवा रुपैया नैवेद्य का, मुझसे यूं फरमाया रे॥ धन्य॥
कान पकड़ मैं माफी मांगी, सफल यात्रा कीन्ही।
पत्नी भूल-भूलइया चाली, तें राखी निगरानीरे॥ धन्य॥
जोधपुर का रहने वाला, मेघराज भणशाली।
भूल-भूलइया चालण लाग्या, तें राखी निगरानीरे॥ धन्य॥
ऐसे चमत्कार बहुतेरे, कहता पार न आवे।
अपढ़ मूढ़मति मैं हूं बालक, मुखसे वर्णन जावेरे॥ धन्य॥
शरण लीनी अब तेरी बाबा, निर्भय होकर फिरता।
निश्चय मनमें करके 'पुनम' नाम तुम्हारा रटता रे॥
धन्य भाग्य हमारा॥

॥ भजन ॥

धन्यधन्य भोमियाजी महाराज, समकित देव कहानेवाले ॥
तुम हो मधुवनके सरदार, विनती सुनलो तुम करतार ॥
नइया भवसागर करो पार, भक्त की पीड़ मिटानेवाले ॥धन्य॥
तीर्थ सम्मेतशिखर गिरिराज, पहुंचे मोक्ष वीस जिनराज।
अधिष्ठायक भोमिया महाराज, पथिकको राह दिखानेवाले।
तेरा परचा जगमें भारी, गावे तव गुण नर और नारी।
करदो सफल यात्रा म्हारी, पथ प्रदर्शक कहानेवाले ॥धन्य॥
तेरा नाम अनेक प्रकारी, भैरूँ क्षेत्रपाल सुखकारी।
भोमिया नाम अति हितकारी, विघ्न दूर हटाने वाले॥ध०॥
बाबो सर्वगुणों की खान, गावे दास 'पुनम' गुण गान,
ध्यावो सवि दिलमें धर ध्यान, धर्मकी शान बढ़ानेवाले।ध०।

॥ भजन ॥

(तर्ज—गजल)

अधिष्ठायक शिखर गिरिका, जग में डंका बजता है।
भोमिया देव बाबे का, जगत में डंका बजता है॥
दर्शन बाबे का, करने पर, यात्री शिखर जाता है।

कठिन रास्ता भी भक्तिसे, भविजन सरल पाता है ॥१॥
कोई कुछ दोष करता है, तभी तकलीफ पाता है ॥
बावे का ध्यान करने पर, अमन और चैन पाता है ॥२॥
भक्त जब कष्ट पाता है, तभी वो मदद को आता है ।
नेह निज वाणी से करले, पाठ सबको सिखलाता है ॥३॥
करो भवि ध्यान शुभ भावे, 'पुनम' यह अर्ज करता है ।
परम पद को तभी पावे, जो शुद्ध मन गुणगाता है ॥४॥

॥ भजन ॥

देवो आशीश तुम बाबा, फर्ज अपना निभावें हम ।
सभी सेवा तुम्हारी कर, सफल जीवन बनावें हम ॥
तुम्हीं समकित धारी देव, करे श्रावक सभी सेवा ।
पावे भक्ति रूपी मेवा, जीवन सार्थक बनावें हम ॥१॥
अजब सुन्दर तेरा मुखड़ा, दर्शनकर भूलते दुखड़ा ।
तेरे दरबार में आकर, परम आनन्द पाते हम ॥२॥
करें हम एकता भारी, बने सब धीर बलधारी ।
भक्ति करने की शक्ति दो भजन करके रिझावें हम ॥३॥
कर उपकार जातिका, मिटे दुख भाँति भाँति का ।
देवो वरदान 'पूनम' को, विनय तुमको सुनाते हम ॥४॥

॥ भजन ॥

(चाल—कांटो लाग्यो रे देवरिया)

तोरे चरण पै बलिहारी जाऊँ, भोमिया महाराज !
भोमिया महाराज, समकित अधिष्टायक महाराज। टेर।
सम्मेत शिखर तीरथ जग भारी, यात्रा करते भवि सुख-कारी। भोमिया मन्दिर जहाँ मनोहरी, पूजे सकल समाज ॥तोरे॥ आशा मेरी पूरण कर दो भक्ति रग रग मेरे भर दो। रोग सोग मेरा जल्दी हरदो, भक्त के शिरताज ॥ तोरे॥ भव सिन्धु में लोर घणेरा, डग मग करता जियड़ा मेरा। पीछे फिरता पाप लुटेरा कर दो पार जहाज ॥ तोरे॥ बेटा पोता नारी दौलत देखो बाबा दुनिया बोलत। ऐसी कामना करते डोलत अधिक जन है आज ॥ तोरे॥ धन समझूँ भक्ति की ढेरी, मैं चाहता हूँ सेवा तेरी। शक्ति देना कर मत देरी इतनी रख अब लाज ॥ तोरे॥ साल सतानवे खूब सवाया महीना फाल्गुण का मन भाया। 'पूनम रतन' मिल गुण गाया, देखो 'अमर' रिवाज ॥तोरे॥

॥ भजन ॥

(चाल—सोरठ प्रभु पार्श्व मोहन गारा रे)

बाबा भोमिया अति सुखकारा रे, जो भविजन ने लगे प्यारा ॥ आँकड़ी ॥ सम्मेत शिखर मधुवन अधिष्ठा-यक, जाने सकल संसारा। जब-जब भीड़ पड़ी भक्तन पर, तब-तब आन उबारा रे ॥ बाबा ॥ भाव धरी तब पूजन करते, श्रावक का परिवारा। हिलमिल कर हर्षित हो मन में, करे प्रक्षालन जयकारा रे ॥ बाबा ॥ भर-भर झारी दूध चढ़ावे, तेल सिंदूर अपारा। बरग अतर चन्दन पुष्पन से, अङ्गीया रचे मनोहारा रे ॥ बाबा ॥ भक्त जनो को सब ही तारे, मैं हूँ मूढ़ गंवारा। मुझ निन्दक ने तारो जानूँ, तारक नाम तुम्हारा रे ॥ बाबा ॥ दुनियां मांगे कंचन माया, तब सेवा छवि न्यारा। धर्म ध्यान में सहा-यक होकर, पार करो भव पार रे ॥ बाबा ॥ अधिष्ठायक भैरूं और भोमिया, प्रचलित नाम तिहारा। पथ प्रदर्शक साचो साहिब, तुम पत राखनहारा रे ॥ बाबा ॥ साचो इल्म बतायो तुमने, धन्य-धन्य भाग्य हमारा।

तुकबन्दी की रचना में भी, देते आप सहारा रे ॥ बाबा ॥
पूर्व पुण्य से तुमको पाया, छोड़े न 'पूनम' लारा । वर दो
अब 'अमर' को ऐसा, चमके धर्म सितारा रे ॥ बाबा ॥

॥ भजन ॥

(चाल—छोटे से बलमा मोरे आंगने में गिल्ली खेले)

ध्यावोजी ध्यावो बाबा भोमिया को भविजन मन में ॥ध्या०॥
सम्मेत शिखर गिरराज, तीर्थ के मधुबन में ।
सुन्दर है जिनका दरबार, दर्शन कर लो पल में ॥ ध्या० १ ॥
बीस तीर्थंकर गए मोक्ष, ऐसे पहाड़ ऊपर में ।
अधिष्ठायक समकित देव, बाबो इस तीरथ में ॥ ध्या० २ ॥
यात्रा करन आवे लोग, ज्यादा मास फागुन में ।
आज्ञा ले चढ़ते पहाड़, होते हर्ष मगन में ॥ ध्या० ३ ॥
दुखियों का दुःख करे दूर, परचा प्रत्यक्ष जग में ।
'पूनम' नमन करत, बावे चरण कमल में ॥ ध्या० ४ ॥

॥ भजन ॥

(चाल—कांटो लागी रे देवरिया मोसे संग चल्यो न जाय)

चालो भाव धरी, भवि दर्शन करने बावेरे दरबार ॥ चालो ॥ सम्मेत शिखर की महिमा न्यारी, मधुबन की छवि लागे प्यारी। भोमिया मन्दिर जहाँ सुखकारी, पूजे धन नर नार ॥ चालो ॥ १ ॥ मूरत जाकी मोहनगारी, दूध चढ़े नित भर-भर झारी। तेल सिंदूर अपारी, चाढ़े भाव भक्ति दिल धार ॥ चालो ॥ २ ॥ अतर फुलेल सुगन्ध लगावे, अंगियां वरगसे खूब रचावे। केशर पुष्प चढ़ावें, नितरा श्रावक का परिवार ॥ चालो ॥ ३ ॥ धूप दीप बावे रे खेवे, चाढ़े भर थाली मेवे। बाबा भोग लगावे, होकर वश भक्तों के लार ॥ चालो ॥ ४ ॥ यात्री शिखर पै जाना चावे, तब बावे ने शीश झुकावे। सफल यात्रा करके आवे, निर्भय कर वन पार ॥ चालो ॥ ५ ॥ शुद्ध मन जो बावे ने ध्यावे, निश्चय वो वांछित फल पावे। सकल संघ सब मुख से गावे बावे की जयकार ॥ चालो ॥ ६ ॥ साल छयानवे खूब सवाया, फागुन में 'अमर' भी आया। 'पुनम' शीश नमाया, मिलसी फल भक्ति अनुसार ॥ ॥ चालो ॥ ७ ॥

॥ भजन ॥

(चाल—भीनासार स्वामी अन्तर जामी वारो पार्श्वनाथ)

म्हारा भोमिया प्यारा, जग हितकारा मेहर करो महाराज। सम्मेत शिखर मधुवन अधिष्ठायक, समकित साचो देव। भव भव भंजन जन मन रंजन करूँ तुम्हारी सेव ॥म्हारा॥ भोमिया क्षेत्रपाल अरु भरु, बोले नाम अनेक। साचो नाम तुम्हारो जाणूं, पथ प्रदर्शक एक रे ॥म्हारा॥ देव जगत के सब देखे, पर तुम जैसा नहीं देव। दुःख निवारण, जग सुख कारण, भक्तन की राखे टेक ॥म्हारा॥ आप सिवाय है कौन हमारो, अलबेलो आधार। भटकत भटकत पुण्ये पायो, छोड़ूं न थारो लारर ॥म्हारा॥ मात तात पुत्र अरु नारी, मतलब का परिवार। साँचा साथी बाबा मिलियो, तूँ ही तारणहारर ॥ म्हारा ॥ तन धन योवन लागे झूठा, झूठा सब संसार। सांचो नाम तुम्हारो बाबा भक्तन के रखवारे ॥ बाबा ॥ आशीश मांगूँ बाबा थारी होवे वंछित काज। 'पूनम' अर्ज करे कर जोड़ी, राखो हमारी लाज रे ॥ म्हारा ॥

तर्ज :—राजा जानी फिलम :—शराफत

नैया मोरी बीच भँवर से अब तो पार लगानी,
ओ बाबा ज्ञानी, ओ बाबा ज्ञानी।

आये खेलने बाबा से होली, भरभर लाये फूलनरी झोली
तेलमें सिन्दुर मिलाकर, जलमें केशर घोली। ओ बाबा०

थारी चर्णासे अंगिया रचावां,
गल बिच हिवड़े रो हार सजावां,
भक्ति थारी करके बाबा मन वंछित फल पावां। बाबा०

भवसे पार करो मेरी नैया, आओ शिखरगिरी के रखैया,
ज्ञानकी ज्योती जगाकर मनमें, बन जाओ खिवैया। बाबा०

अब तो अर्जी सुनलो हमारी, जाऊँ सूरत पर मैं वारी
दास 'विमल' तो हरदम बाबा पावे पर्चा मारी।
बाबा ज्ञानी...

॥ भजन ॥

आजा आजा मेरे सरदार, तुम्हें भक्त पुकारें,
फरियाद करने को सांमिया आया हूँ द्वारे ॥
जब-जब पड़ी मुसीबत, तब-तब तुझे पुकारा ॥२॥
समय-समय पर पहुंच, तूने कार्य सुधारे २ ॥ आजा ॥

अब ढूँढते-ढूँढते मैं, मधुबन में आया २ ॥
ध्यान लगाकर बैठे सब कोई, तेरे चरणों में २ ॥
सरना लेकर बैठे सब कोई, तेरे चरनों में २ ॥
सुन-सुन के पुकार सबका दुख निवारे २ ॥ आजा ॥

मेरे ऊपर पड़ी मुसीबत, कर देना उपकार २ ॥
अटकी हुई नाव, जल्दी लगा किनारे २ ॥ आजा ॥
करता 'अमर' बीनती मेरी अर्ज स्वीकारो २ ॥
करने में उद्धार सबका हाथ तुम्हारे २ ॥ आजा ॥

॥ भजन ॥

भइया भजले भोमिया नाम, प्रतक्ष तूँ परचो पावेलो,
थारा कारज होसी सिद्ध; अगर तूँ इक चित ध्यावे लो
भइया ॥

आवो मिल बावे दरबार, संघ में लावो सब परिवार,
संसय करना बुरा विचार,
यदि राख्यो मन सन्देह, फेर पाछे पछतावे लो ॥भइया॥

समरन बावे का नित करना, ध्यान बैठ इक चितसे धरना
सच्चे मन यदि लेवोगे सरना,
जैसे बासो बीज, वैसी फल निश्चय पावेलो ॥भइया॥

कोई बावे ने किया उपकार, भक्त करे आ-आ सत्कार
दुखी जन कर रहें इन्तज़ार,
रखोगे मन विश्वास, तो थारी कष्ट मिलावेलो ॥भइया॥

दिया करो बावे की फेरी, होसी नहीं उद्धार में देरी,
'अमर की भी सुनी थी टेरी,
अचानक अड़चन में बाबो, आकर बचावे ॥भइया॥

॥ भजन ॥

ओ शिखर गिरी के भोमिया, टेरी सुन करके मेरी ;
कष्ट मिटाजा, आजा फन्द छुड़ाजा ॥

उमड़-घुमड़ कर बादल दुख के ; आगये आगये,
अशुभ कर्म के जोग नयन में, छा गये छा गये
अब कैसे हो छुटकारा रे, भक्त पै करुणा करके—
रस्ता बताजा, आजा—राह दिखाजा ॥ओ शिखर॥

किसी भक्त को क्या-क्या मनमें, कष्ट है कष्ट है,
वो सनमुख तेरे कह देता, स्पष्ट है स्पष्ट है,
अब किसी तरह बचावो रे, पर उपकारी बन के,
बिगड़ी बनाजा, आजा—खबर लिवाजा ॥ओ शिखर॥

दुख भरे इन आँसुओं को कहने दो कहने दो,
हो गई नींद हराम चैन से, रहने दो रहने दो,
दरद मेरा मिटाओ रे, दया हृदय में धरके,
मोहे हँसाजा - धैर्य बन्धाजा ॥ ओ शिखर० ॥

कौन कर्म मेरे आके लातकी, मार गया मार गया,
मैं तेरे इन्तजार में बैठा, हार गया हार गया,

॥ भजन ॥

अब ना तड़फाओ रे, लगी तूँ अगर बुझाकर,
मेरी भी बुझजा, आजा आग बुझाजा ॥ओ शिखर०॥
करूँ प्रार्थना हाथ जोड़, सुन लीजिये, सुन लीजिये,
मन का मनोरथ पूरा जल्दी, कीजिये कीजिये,
अब तेरे भरोसे बैठा 'अमर' तो कमर कसके,
साची सुनाजा आजा—बात बताजा ॥ओ शिखर० ।

॥ भजन ॥

भोमिया दादा, क्या है इरादा, कहदे मुखसे बोल ॥
बहुत दिनों से मनमें लगी थी, कब आऊँ मधुबन,
आज हृदय में हर्ष हुवो है, कर थारा दर्शन ॥रे म्हारा भो०
भक्त जनों को तू करकर दिखाई अजब अनोखी बात
इसीलिये तूँ चमक रहा है, दुनियाँ में साक्षात ॥रे म्हा०॥
दया कर दयालू दादा, बिगरी दशा सुधार,
फँसा पड़ा हूँ भँवर जाल में करदे नइया पार ।रे म्हारा भो०
सद्गुण भर दे मेरे मन में, दुरगुण करदे दूर,
अहंकार भावना रहे न मेरे, क्रोध होवे चकनाचूर। रेम्हारा भो०

चारो तरफ मेरे छाया हुवा है, अज्ञान अन्धेरा,
कैसे कटे और कब कटे, मेरी विपदा का घेरा ॥रेम्हारा भो०॥
अब तक तो तूं बहोत निभाई, आगे निभा देना,
जब कभी मेरी नावड़ी अटके, पार लगा देना ॥रेम्हारा भो०॥
नहीं हृदय बीच बलबुद्धि है, न कुछ है शक्ति,
न कुछ साधन रिझाऊँ तुझको, नहीं कुछ भक्ति।रेम्हारा भो०
मैं हूँ तेरे दर का भिखारी जरा दया करना,
भूल चूक मेरी माफी करके, ज्ञान दीये सरना ॥रेम्हारा भो०॥
सम्भव है कभी झंझट में पड़कर भूल जाऊँ तुमको
मेरी गलतीपर ध्यान धरकर, न भूले मुझको ॥रेम्हारा भो०॥
बुराहूँ तो रहूँगा तेरा, भला भी तेरा,
'अमर' कहे तेरी अमर ज्योतिसे हटाना अंधेरा ।रेम्हारा भो०

॥ भजन ॥

(तर्ज—वीरतारु नाम प्यारो लागे हो देव शिव सुखदाया)

भक्त वत्सल प्रतिपालक हो देव दर्शन को आया ॥
शिखरगिरि अधिष्ठायक बावा भोमिया नाम धराया ।होदेव
नरनारी मिल ध्यावना करते परतक्ष परचा पाया ।होदेव॥

॥ भजन ॥

सम्मेत शिखरकी महिमा मोटी, तूँने जग दी पाया । होदेव॥
विषम पहाड़की कठिन यात्रा, सरल कर पहुँचाया ॥होदेव॥
प्रभु भक्ति से तूँ रहे राजी, सहायक मुझे बनाया । होदेव॥
कैसे खुले मेरी ज्ञानकी ज्योति, 'अमर' समझ नहीं पायाहो ॥

॥ भजन ॥

आज मधुवन में आयो री, मैंने पायो भोमिया देव ॥
सम्मेत शिखर तीरथ है भारी, गये मोक्ष जहाँ बीस अवतारी
इस भोमी को रक्षक बनकर, राज रज्ञायो री ॥ मैंने० ॥
प्रथम यात्री पहाड़ पै जावे, आज्ञा लेने थारी आवे,
चढ़ते समय थारे चरन कमलमें, सीस नमायोरी ॥ मैंने० ॥
विकट विकट पहाड़ों का रस्ता, चढ़ता यात्री हस्ता-हस्ता
पड़े भीड़ अचानक तबही, परचो दिखायो री ॥ मैंने० ॥
सफल यात्रा कर यात्री आवे, फिर बाबेका ध्यान लगावे,
अजब अनोखी रचना देख, मन अति हर्षायो री ॥मैंने०॥
जिसने सहारा नाम तिहारा, धन सन्तान बढ़ा बैपारा,
कटा वेदनी कष्ट, हृदय में ध्यान लगायोरी ॥ मैंने० ॥
देखा उच्छव मधुवन आकर, रिझा रहे भक्त गुण गाकर,
तेरी चमत्कार को देख 'अमर' सरने में आयोरी ॥मैंने०॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—इक दिल के टुकड़े हजार हुए कोई यहां गिरा''')

(फिल्म—प्यार की जीत)

संसार असारसे तरनेको, कोई इधर फिरे, कोई उधर फिरे,
अपनेको सच्चा मान मान, कोई इधर फिरे, कोई उधर फिरे,
मनुष्य, देव और सब जीवोंको, मुक्ति मार्ग की चाहना है
पर कर्म गति के कारन से, कोई इधर फिरे कोई उधर
फिरे ॥ संसार ॥

सुगुरु सुदेव सुधर्म भी, संयोग पुण्य से मिल गया
पर अंधविश्वासमें पड़-पड़कर कोई इधर फिरे कोई उधर फिरे
अब देव भोमिया मदद करो, सनमार्ग सबको दिखला दो
सब आड़ धर्म की ले लेकर, कोई इधर फिरे कोई उधर
फिरे ॥ संसार ॥

हम द्वेष ईर्षा कर करके यह अमूल्य जीवन खो रहे
'अमर' को ताज्जुब होता है, कोई इधर फिरे कोई उधर
फिरे ॥ संसार ॥

॥ भजन ॥

(चाल—इक दिल के टुकड़े हजार हुए)
(फिल्म—प्यार की जीत)

जैनधर्मके फिरके अनेक हुए, कोई इधर गया कोई उधर गया
मालाके मणके बिखर गये, कोई इधर गया कोई उधर गया

— अन्तरा —

हम बीर वचन उपासक थे, मुक्ति मारग के साधक थे।
आपसमें अलग-अलग होकर, कोई इधर गया कोई उधर गया।
आग में वाणी उनकी थी, सबने मिलकर अपनाया था।
अभिमान मानसे फिसल गये, कोई इधर गया कोई उधर गया।
जैनधर्म का झंडा ऊँचा था, जगमें कोई शानमें दूजा था।
पर अलग होय कमजोर बने, कोई इधर गया कोई उधर गया।
अब सम्मेत शिखर अधिष्ठायकको, हम मददगार बनायेंगे।
ये हवा जमानेकी बदली, कोई इधर गया कोई उधर गया।
साधन करके फिर मिलने का, बिखरी माला जुड़वा लेंगे।
ये 'अमर' को अच्छा नहीं लगता, कोई इधर गया कोई···

॥ भजन ॥

(तर्ज—देख तेरी संसार की हालत)

(फिल्म—नास्तिक)

आओ आओ देव भोमिया, करदो धर्म प्रचार ।
मेरा कैसे हो उद्धार, मेरा कैसे हो उद्धार ॥
ऐसा जमाना आया बाबा, पापी की जयकार ।
मेरा कैसे हो उद्धार, मेरा कैसे हो उद्धार ॥

(अन्तरा)

दुनिया का है ढङ्ग निराला, ऊपर उजला भीतर काला ।
देखनमें है शांति वाला, क्रोध की वो भड़कावत ज्वाला ।
देख देख कर इस हालत को, आते कई विचार ॥ मेरा ॥
पाप करन में रहते आगे, धर्म नाम से कोसों भागे ।
सद्‌गुण का उपदेश न लागे, शुभ कर्म अब कैसे जागे ॥
मानव जन्म वृथा में खोकर, कैसे हो निस्तार ॥ मेरा ॥
सुख पराया देख जो जलते, कर-कर मनमें फिकरसे गलते ।
बगुला भक्तकी चालमें चलते, नहीं कभी वो फूलते-फलते ।
अब तो सीधी राह दिखाकर, करो 'अमर' उपकार ॥ मेरा ॥

(तर्ज—कितना नाजुक है दिल—फिल्म शाहजहाँ)

तुम से लागी लगन, लेलो अपनी शरण भोमिया प्यारा,
मेटो २ ये संकट हमारा। तुमसे लागी लगन...
द्वार तेरे मैं हरदम आऊँ, भक्ति भाव से पूजा रचाऊ
लेकर तेल सिन्दुर जलधारा, मेटो मेटो ये संकट हमारा
आँगी वर्गा से मैं चमकाऊ, टिक्यां केशर री खूब लगाऊँ।
लेकर फूल गुलाब हजारा, मेटो २ ये संकट हमारा ॥तुम॥
तेरी शोभा है जग से न्यारी, जा भी पावे है परचा भारी।
लेकर अपनी लगन, आवे तेरी शरण नरनारी ॥ तुम ॥
ये दास 'विमल' गुण गाये, तेरे चरणों में शीश झुकाये
संकट दूर हरो, अर्जी मेरी सुनो देव हमारा,
पूरो पूरो ये आश हमारी ॥ तुमसे लागी

॥ भजन ॥

(तर्ज—दरवाजों से टकरा जाते हैं दिवारों से बाते होती है)
(फिल्म—रात की रानी)

मदद करो श्री भोमिया बाबा, रो-रो कर हम कहते हैं।
कर्म गति को देख देख, हम आँखों आँसू बहाते हैं॥

(अन्तरा)

छल कपटाई फैल रही, दुनियाँ का ढंग निराला है।
भूखों मरते हैं कई भाई, ना कोई सुनने वाला है।
मनकी बात मन में रखकर खामोशी से घर रहते हैं ॥म०॥
थोड़े से स्वार्थ के ताँई जिद्द अपनी कोई न छोड़े।
भला बुरा व्यवहार न समझे भाई भाई सिर फोड़े॥
जो जुल्म अधीनता सब भाग्य समझकर सहते हैं ॥म०॥
सुना है सबर का फल मिठा, जिसकी इन्तजारी
में अड़े रहें।
विपताओं की आँधी में, हम पत्थर जैसे खड़े रहें॥
आयो बताओ उपाय 'अमर' को, क्या करना क्या
कहते हैं ॥म०॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—गायेजा गीत मिलन के—फिलम मेला)

गाये जा गीत धर्म के, न दोष धर्म के, मोक्षपद पाना है,

(अन्तरा)

सम्मेत शिखर की यात्रा करने, घर से जल्दी निकल।
एसो मोटो धाम भेटकर, कर काया निरमल॥
प्यासे हैं नयन दर्शन के (प्रभू दर्शन के)
मोक्ष पद पाना है ॥१॥

पापी मनुष्य पहुँचे तीरथ में, बुद्धि जाय बदल।
धन्य है जिसने करी यात्रा, किया जन्म सफल॥
ध्यानकर मनमनमें (प्रभू शरण में) मोक्ष पद पाना है ॥२॥
भाव-भक्ति से कर कर यात्रा, करलो जन्म सफल
इसी पहाड़ का देव भोमिया, देगा हिमत बल॥
'अमर' रहे चरननमें (हांतरननमें) मोक्षपद पाना है ॥३॥
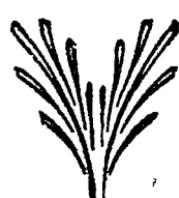
॥ भजन ॥

(तर्ज—बचपन की मोहब्बत को, दिल से न जुदा करना)

[फिल्म—बैजू बावरा]

ओ ! समकित धारी देव, सन्मार्ग दिखा देना ।
तेरी शरण में आया हूँ पथ पार लगा देना ॥

(अन्तरा)

जग में सब स्वार्थ साथी, न सुनने वाला है ।
करमों ने मुझे बाधा, चक्कर में डाला है ॥
यह कैसे खपाऊँ मैं, जरा यह तो बता देना ॥१॥
चारों गती में घूमा, तब नर भव पाया है ।
पुन्याायो पूरबली से, सुधर्म भी आया है ॥
आगे दशा क्या होगी, मुझको चेता देना ॥२॥
अब कैसे संभल सकूंगा, ये अजीब माया है ।
धाया सो गँवाया है, रंग पाप जमाया है ॥
फरियाद 'अमर' की सुनकर, हालत सुना देना ॥३॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—आजावो तड़पते हैं अरमां, अब रात गुजरनेवाली है)
(फिल्म—आवारा)

आजावो तड़पता हूँ बाबा, अब याद तुम्हारी आती है।
फरियाद करूँ पुकार करूँ; फिर सुनी नहीं क्यों जाती है।

(अन्तरा)

जब पड़ी मुसीबत याद किया, श्रीभोमिया महाराजको।
किस नींद में सोये हो बाबा, यह बात समझ नहीं आतीहै ॥१॥
क्या रूठ गये या भूल गये, अपराध मेरे से क्या हुवा।
हम आश ही आशमें बस रहे ये समय बीतती जाती है ॥२॥
दिन उदय हुवा या अस्त हुवा, पता नहीं लग पाता है।
मेरे तकदीर के पीछे को, देखी दुनियाँ नहीं जाती है ॥३॥
तेरा राज रहे मेरी लाज रहे, अशांति संघ में क्यां रहे।
यह हृदय रोग की पीड़ा तो, 'अमर' से सही नहीं जाती है॥४॥

॥ भजन ॥

तर्ज—(दो दिन का मेहमान— फिल्म आन)

ओ ! दो दिन का मेहमान, सुन दे कान
कि आखिर जाना है शमशान ॥
न लिया गुरु से आज्ञा न कौड़ी दान
क्यों झूठा करता है अभिमान

(अन्तरा)

आँखों में अन्धेरा छाया है, तू इसलिये भरमाया है।
पूर्व पुन्य के कारन तुझको, मनुष्य जन्म मिल पाया है
आगे पड़ेगी मार, हो जा होशियार, तू करले बचनेका सामान
॥ओ॥ कपट किया तो खोटी है, निंदा भी छोटी-मोटी है।
झूठ साँच कर पेट भरे, वो रोटी में नहीं रोटी है।
कर हिंसाका त्याग, धर वैराग लेले भोमिया बदान ॥ओ॥
दिन चार की ये जिन्दगानी है, इसमें नहीं आनी जानी है।
'अमर' कहे, मन सत्य रहे, वो ही जग सच्चा प्राणी है ॥
अब त्यागो लाख हजार, करो उपजार, यही है भोमिया
बदान ॥ ओ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज— दूर कोई गाये धुन ये सुनाये तेरे विन छलिया रे)

(फिल्म—बैजू बावरा)

खोज खोज आये, मुशकिल पाये, दर्शन मिलीयारे,—
भजलो भोमिया रे ।

(अन्तरा)

मेरे मनमें तेरी है भक्ति, बैठा ध्यान लगाये ।
पूछ पूछकर पता निकाला, सच्चा साथी पाए ।
सनमुख आके, तेरा गुण गाके, दर्शन मिलीया रे—
भजलो भोमिया रे ॥ १ ॥

मौत खोल मुँह बैठी सिर पर, मैं गलफत में सोया ।
ऐसे जग जञ्जाल में फँसकर, वृथा जन्म ही खोया ।
धर्म भुलाके, ठोकर खाके, दर्शन मिलिया रे—
भजलो भोमिया रे ॥ २ ॥

जीवन आशा टूट गई जब, तब मन किया विचार ।
'अमर' पूछने आया तुझसे, कैसे हो उद्धार ।
दो समझा के, राह बताके, दर्शन मिलिया रे—
भजलो भोमिमा रे ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

श्री भोमिया दर्शन करके हम जा रहे हैं ।
चरन कमल में शीश नमाकर जा रहे हैं ।

(अन्तरा)

पूजा भक्ति हुई न पूरी, परमाद पणो रह गई अधूरी ।
परमाद पणेकी नशीयत सजा पा रहे हैं ॥श्री भोमिया०॥
क्या चढ़ाऊँ कुछ नहीं सूझे, दुनियाँ रकम-रकम से पूजे ।
हम निरभागी हाथ जोड़कर जा रहे हैं ॥श्री भोमिया०॥
मनमें उठ रहे लहर हिलोरे, कहीं है काँटे कहीं है रोड़े ।
जाते हैं पर पगड़े थर-थर-थरा रहे हैं ॥श्री भोमिया०॥
दिखावटी आडम्बर किना, नाकोई तनमन-धन ही दीनां ।
मत खोलपोल हम सानमें समझा रहे हैं ॥श्री भोमिया०॥
ऐसा 'अमर'का हृदय करदो, भूलूँ नहीं भक्ति मन भरदो ।
अब लेते रहना खबर यही, हम जा रहे हैं॥श्री भोमिया०

॥ भजन ॥

—जाते समय—

(तर्ज—जब तुम्हीं चले परदेश, लगाकर ठेस हो प्रीतम प्यारा)

अब हम जाते हैं घर, झुका कर सर, हो भोमिया प्यारा ।
आशीश का करो इशारा ॥
दिलतो यह जाने नहीं करता, पर गये विनाभी नहीं सरता,
अब करूँ तो कौन उपाय, नहीं कोई चारा ॥आशीशका०॥
आवें तब हृदय हर्ष होवे, जाते समय नयन रोवे ।
बिछुड़न से नयन में, बहती आँसू धारा ॥ आशीश का० ॥
कुछ हुई नहीं पूजा भक्ति, नहीं धन लगाने की शक्ति,
सिर्फ हाथ जोड़ कर, छोड़ा रहा हूँ द्वारा ॥आशीश का०॥
फिर जल्दी बुला दर्शन देना, खबर मेरी लेते रहना,
निश्चिन्त रहूँ मैं तुझ पर हर प्रकार ॥ आशीश का० ॥
गल्ती यदि कुछ हुई मेरी, कर देना माफ सुनकर टेरी,
रहे 'अमर' आपके, होकम का हलकारा ॥ आशीशका० ॥

(तर्ज—मिलूं न तुमसे जी घबराये मिलूं तो—फिल्म हीर रांझा)

तेरे दर्श को मधुवन आये, तुम्ही से प्रीत लगाये।
हमें क्या हो गया है। हमें क्या हो गया है॥
मधुबन के राजा तेरी महिमा सुनी थी मैंने कान में।
प्रत्यक्ष पर्चा पाने आया हूँ तेरे दरबार में॥
दर्श दिखाओ, प्यास बुझावो, जीवन सफल बनाओं।
हमें क्या हो गया है। तेरे दर्श को मधुबन आये...
आसातना भारी हुई दो हजार अट्ठाईस के साल में
श्रीसंग ने पूजा का विवेक न रक्खा अनजान में॥
अर्द्धरात्री में प्रगट होयकर श्री मुख से फरमावे।
हमें क्या हो गया है। तेरे दर्श को मधुवन आये...
श्री संग मिल कर आवो, शान्ति सनात्र कराओ।
माफी किये की चाहो, आगे ध्यान रखाओ।
अखण्ड दुध की धार लगाओं, कष्ट सभी टल जाव॥
हमें क्या हो गया है। तेरे दर्श को मधुवन आये...
शिखर गिरि के वासी देखी जो महिमा तेरे नामकी
दरपे जो भी पड़े जपते हैं माला तेरे नाम की।
'विमल' तुम्हीसे प्रीत लगाये, तुम्ही को हाल सुनाये।
हमें क्या हो गया हैं। तेरे दर्श को मधुबन आये...

॥ भजन ॥
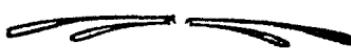
तर्ज :—कव्वाली

अरज सुनलो मेरी बाबा ! तेरे दरबार में आये,
दर्शन के थे प्यासे हम तेरे दरबार में आये।

शेर

शिखर-गिरी भोमिया बाबा ! तूँ ही मेरा रखवाला है
तूँ ही बुझते हुए दीपक में ज्योति देनेवाला है,
खड़े हैं तेरे दरपे आज हम तो शिर को झुकाये ॥ १ ॥
॥ अर्ज सुनलो ॥

ये बालक "वीर मंडल" के शरण में आये हैं तेरी
दुखों को दूर कर मेरे ओ बाबा ! मत करो देरी
हम अपने दुःख की कहानी तेरे दरबार में लाये ॥ २ ॥
॥ अर्ज सुनलो ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज :— मारवाड़ी)

ओ तो भूल्योड़ाँ ने मारगियो देखावे हो राज
सम्मेत शिखर रो बाबो भोमियो।
ओ तो परतक्ष परचो देखावे हो राज
सम्मेत शिखर रो बाबो भोमियो।

अन्तरा

दूर दूर सूँ आवे यात्री पूजा आण रचावे
भक्ति भाव सूँ प्रेरित होकर तैल सिन्दूर चढ़ावे,
ए तो वरगों सूँ अँगिया रचावे हो राज ॥ १ ॥
देख देख बाबेरी मूरत बड़ा बड़ा चकरावे
ऐसो रूप बण्यों हैं जिण सूँ रोम रोम हरखावे
ओ तो संकट सगला मिटावे हो राज ॥ २ ॥
चार दिनों री है जिन्दगानी बिरथा मती गमावो
कर भक्ति बाबेरी पर्चा हाथो हाथ पावो
ओ तो "वीर मंडल", गुण गावे हो राज ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज :—ए मेरी जिन्दगी''' फिल्म—टैक्सी ड्राइवर)

अस्थायी

हे मेरे भोमिया, शरण तेरी आया हूँ
दुखों का सताया हूँ, तेरे बिन दुःख मेरे कौन मिटाये
हे मेरे भोमिया।

अन्तरा

अरजी सुनलो मेरी, मधुबन के रखवाले
अब तो आशा तिहारी, कष्ट मिटाने वाले
तूँ ही मेरे जीवन को सफल बनाये
॥हे मेरे ॥१॥

पल पल घटती जाये, ये मेरी जिन्दगानी
कहाँ ढूँढ़ने जाऊँ अखियाँ दरश की दीवानी
तूँ ही मेरी अखियों की प्यास बुझाये
॥हे मेरे॥ २ ॥

दास के फन्द छुड़ावो दिलकी ज्वाला बुझावो
अपना फर्ज निभावो, सीधी राह दिखावो
'वीर मन्डल'' तेरे गुण गाये
॥हे मेरे॥ ३ ॥
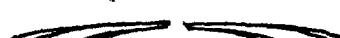
॥ भजन ॥

(तर्ज—धरती धोरां री—मारवाड़ी)

थारो दुःखड़ो सुख बण जावे, जो तूं साचे मन ध्यावे
डूबी नांव किनारे आवे, बोल जय बावेरी,
भोमिया बावेरी।

अन्तरा

बावो मधुवन रो रखवालो, परचो परतक्ष देवन वालो
डंको बाज रह्यो है आलो, धरती मांही रे
भूल्यों मारगियो बतलावे, संकट पड़ियों आडो आवे
आफत नाम लियों टल जावे बोल जय बावेरी ॥ १ ॥
साथी दूर दूर सूं आवे, भरिया कलशों दूध ढलावे,
मनड़ो देख देख हुलसावे, मूरत बावेरी,
ए तो तेल सिन्दूर चढ़ावे अन्तर रकम रकम रा लावे
अंगी बरगों सूं चमकावे भोमिये बावेरी ॥ २ ॥
तीरथ शिखर गिरी रो भारी, पहाड़ पर चढ़े रोज नरनारी
यात्रा हुवे बड़ी सुखकारी मरजी बावेरी
ओ तो बुझती ज्योत जगावे, सुमरयों अन्धकार मिट जावे,
साथी "वीर मण्डल" रा गावे बोल जय बावेरी ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—ख्याल)

सुन अरजी म्होंरी, कर दो नी मरजी भैरूँनाथ हो
सुन अरजी म्होंरी ।

अन्तरा

महिमा सुण सुण दूर दूर सूँ आया आपरे द्वार
अब तो कष्ट मिटावो बाबा मधुवन रा रखवार
मधुबन रा रखबार शिखर गिरि भोमिया
॥ सुन अरजी ॥ १ ॥

पड़े भीड़ भक्तों रे ऊपर पग पग करो सहाय
थोंरे बिन ओ बाबा म्होंरे कोई न आडो आय,
कोई न आडो आय है थोंरो आसरो
॥ सुन अरजी ॥ २ ॥

म्हेतो बालक "वीर मंडल" रा करों सदा गुणगान
एक भरोसो थोंरो बाबा, एक लगन इक ध्यान,
एक लगन इक ध्यान कि शरणों आपरो
॥ सुन अरजी ॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—मारवाडी)

होली माथे भाइयों थे मधुवन चालो हो
बावे सूँ करयोड़ी थोड़ी प्रीत पालो हो
के.णो मानलो, हो हो के.णो मानलो
थे बावे भेली गेर रमजो हो, के.णो मानलो।

म्हें तो सुणिया बाबा थे धरती में मोटा बाजो हो
चेला भेली गेर रमताँ क्यों थे लाजो हो
चेलो छोटा सा, हो हो चेला छोटा सा
ए दूर दूर सूँ यात्री आया हो, चेला छोटा सा।

तेल में सिन्दूर मिलाकर बावे ऊपर ढाल्यो हो
वरगों सूँ तो अंगी रचाकर अन्तर ढाल्यो हो
क टीक्यों केशर री, हो हो टीक्यों केशर री
आ गले बिच माला पुष्पोंरी हो टीक्यों केशर री।

बीकोणे रो "वीर मण्डल" थोरे द्वारे आयो हो
पहाड़ चढ़ने फेरी दीनी हरष मनायो हो
धोक दे दीनी हो हो धोक दे दीनी
ए न्हारय धोयने पूजा कीनी हो धोक दे दीनी॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—सायो नारा'''लव इन टोकियो)

जय बोलो जय बोलो, बाबे री थे जय बोलो
हरखावो सब हुलसाओ, सब मिल करके जय बोलो

फागण रो मेलो आयो, मधुबन सारो लहरायो
बाबे साथे गेर खेलणो, सारो जग उमड्यो आयो ।
जय बोलो'''॥१॥

बाबो समकितधारी है, विपदा सब री टारी है,
शिखरगिरी रे बाबे री, महिमा सब सूँ न्यारी है,
जय बोलो'''॥२॥

शिखरगिरी जात्रा कर लो, बाबे री भक्ति कर लो,
साचेमन सूँ ध्यान लगाकर, जनम-जनम रा दुःख हर लो।
जय बोलो'''॥३॥

परचा प्रगट दिखावे है, दिल सूँ जो भी ध्यावे है
मित्र मंडल रा बालक मिलसब, गुण बाबे रा गावे है।
जय बोलो'''॥४॥

॥ भजन ॥

(तर्ज—अपने पिया की मैं तो बनी ''कण-कण में भगवान)

सुणने पुकार अब आवो बाबा भोमिया,
दरसणने आयो इक अरज लियां ''अब आवो बाबा ''

फागण सुदी पूनम ने सब, मधुवन आवे है,
थांरे साथे खेले होली, दूध सूं नहावे है,
गुण थांरा गावे मन ''होऽ ''होऽ ''होऽ ''
गुण थांरा गावे मन, हरख लिया ''अब आवो बाबा ॥१॥

तेल ओ सिन्दूर थांने खूब रचावे है,
बरगों री अंगी म्हारे, मनड़े ने भावे है,
शीश मुकुट थांरे ''होऽ ''होऽ ''होऽ ''
शीश मुकुट रत्नों सुं जड़िया ''अब आवो बाबा ॥२॥

थांरे द्वारे जो भी बाबा, साचे मन सूं आवे है,
पूरी होवे मन री आशा, खाली हाथ न जावे है,
दुःख टल जावे सब ''होऽ ''होऽ ''होऽ ''
दुःख टल जावे थांरा दरश कियाँ ''अब आवो बाबा ॥३॥

'मित्र मण्डल' तो कद सूं बाबा, गुण थांरा गावे है,
म्हैर म्हां पे करदो अबतो, चरणा शीश झुकावे है
विनय करे है सब ''होऽ ''होऽ ''होऽ ''
विनय करे है सब, टाबरिया ''अब आवो बाबा ''॥४॥

॥ भजन ॥

तर्ज—कोरो काजलियो... (मारवाड़ी गीत)

म्हारे हिवड़े री सुण जो पुकार, बाबा भोमिया ।
थे तो मधुबन रा सरदार, बाबा भोमिया ॥
बाबा थांरी म्हेर घणी, थे तो भक्तां रा आधार ।
बाबा भोमिया...॥१॥
समकित धारी देवता, थे तो शिखर-गिरि रा रखवार ।
बाबा भोमिया...॥२॥
परचा दीना थे घणा, कोई पायो न थांरो पार ।
बाबा भोमिया...॥३॥
बाबा थे जग रा धणी, थे तो करुणा रा भण्डार ।
बाबा भोमिया...॥४॥
ई करुणा रे कारणे सब आवे थांरे द्वार ।
बाबा भोमिया...॥५॥
'मित्र-मण्डल' रा टाबरिया, गुण गावे बारम्बार ।
बाबा भोमिया...॥६॥
सब बोले जय-जयकार, बाबा भोमिया ।

॥ भजन ॥

तर्ज—आ बावासा री लाडली···(बावासा री लाडली)

मधुवन में बाबा आज मेलो लाग्यो भारी रे,
गुण गावे थाँरा आज हिल-मिल दुनिया सारी रे।
बाबा थांरे दरशण ने सब दूर दूर सूँ आवे रे,
फागण सुदी पूनम रे दिन कलशों भर दूध ढलावे रे
मूरत आ थांरी सगलों ने लागे प्यारी रे मधुवन···॥१॥

म्हें तो सुणिया भक्तों री थे विपदा सारी टाली रे,
थांरे द्वारे सूँ कोई भी जावे हाथ न खाली रे,
म्हैंर करो बाबा थांसू आ अरजी म्हारी रे···मधुवन ॥२॥

सम्मेत शिखर री जात्रा करने मधुवन जो भी आवे रे,
हुकम लियां बिन थांरा, वो इक डग न चलने पावे रे,
'मित्र-मण्डल'रा बालक गावे महिमा थाँरी रे···मधुवन॥३॥

॥ भजन ॥

तर्ज—चाँदसी महबूबा हो मेरी...(हिमालय की गोद में)

मधुवन वाले बाबे ने आ, ध्यावे दुनियाँ सारी है।
समकित धारी री महिमा तो, सगलों सूँ ही न्यारी है॥

फागण री आ पूनम तो,
घर घर में खुशियाँ लाई है।
बाबे सूँ गैर खेलणने तो,
नगरी उमड़ी सब आई है।
कलशों भर-भर दूध ढ़लावण, आया सब नर-नारी है।१।

तेल, सिन्दूर लगावे है,
कोई वर्गों री अंगिया रचावे है।
शीश मुकुट रत्नों रो है,
कोई मोतियन चोक पुरावे है...।
बाबा थाँरी मूरत आ, सगलों ने लागे प्यारी है...।२।

महिमा सुण ओ 'मित्र मण्डल' भी
थाँरे द्वारे आयो है।
म्हैर करो अब तो बाबा,
थाँरो ही अब एक सायो है।
अब ना तरसाओ, दरशण देवो, अरजी थांसू म्हारी है।३।

॥ भजन ॥

तर्ज—कोई जब राह न पाये…(दोस्ती)

नहीं कोई राह दिखाये, शरण तेरी आये,
कि तुम बिन किसको सुनायें, सुन लो ये करुण पुकार….
तुमको भजे ये सब संसार, सुन लो शिखर गिरि के रखवार
मेरे तो बाबा हो तुम आधार – २
कबसे हैं आश लगाये, शरण तेरी आये…कि तुम बिन ।१।
दर्शन दो मुझे इकबार, कबसे खड़ा हूँ तेरे द्वार,
महिमा तेरी है अपरम्पार-२
मित्र मंडल गुण गाये, शरण तेरी आये, कि तुम बिन…।२।

॥ भजन ॥

तर्ज—बीकाणे रा नाथ म्हाने ' (मारवाड़ी गीत)

चालो हिल मिल हालो, मधुबन चालो, बाबे रे दरबार
बाबे रे दरबार चालो, बाबे रे दरबार…॥टेक॥
फागण री आ पूनम लाई, होली रो त्योहार,
बाबे साथे होली खेलण नें, आवे है नर नार ।…चालो॥१॥
बाबे रा थे हुकम ले चालो, यात्रा करने आज,
बीसां जिनवर चरणों भेट्यां, सिद्धेला सब काज चालो । २॥
बाबे री है महिमा न्यारी, जाणे ओ संसार,
साचे मन सु जो भी ध्यावे, विपदा देवे टार चालो ॥३॥
शिखर गिरि रा देव भैरूँ करुणा रा भण्डार,
मित्र मण्डल केवे बाबे री, बोलो जय-जयकार चालो ॥४॥

॥ भजन ॥

तर्ज—खडी नीम रे नीचे…(मारवाड़ी गीत)

॥ शेर ॥

सम्मेत शिखर रे अधिष्ठायक ने बारबार नमस्कार ।
विनती सुन लो बाबा म्हारी, आयो थाँरे द्वार ॥

॥ स्थायी ॥

धणी म्हेर भक्तो पै बाबा थाँरी है,
समकित धारी देव भोमिया, महिमा थाँरी न्यारी है

॥ अन्तरा ॥

होली माथे बाबा थाँरे, दरशण ने सब आवे है,
थाँरे साथे खेले होली, खुशियाँ खूब मनावे है,
मधुवन में ओ मेलो लागे भारी है…समकितधारी…।१।
ऑगियाँ थाँरी वरगों री, और शीश मुकुट भी सोहे है,
गल बिच माला पुष्पों री तो और म्हारो मन मोहे है,
पूजन तो आया सब नर नारी है… समकितधारी…।२।
शरणे थाँरे जो भी आवे, मनवाँछित फल पावे है,
मित्र मण्डल, रा बालक निशदिन गुण थाँरा ही गावे है ॥
पार करो आ अरजी थाँसू म्हांरी है…समकितधारी ।३।

॥ भजन ॥

तर्ज—परदेशियों से न अँखियाँ…(जब-जब फूल खिले)

खुशियाँ मनाओ, गुण बाबा के गावो,
होली के मेले पर, मधुवन आवो।
फागुण आया आनन्द छाया—२
दर्शन कर मन, अति हर्षाया—२
हर्षित मन से, अँगिया रचाओ…॥ १ ॥

साचे मन से जो कोई ध्याये—२
हर मुश्किल, आसान वो पाये—२
राह कठिन को, सरल बनाओ…॥ २ ॥

'मित्र मण्डल' के बालक गायें—२
निशदिन बाबे का ध्यान लगायें—२
सब मिल, जय जयकार मनावो…॥ ३ ॥

॥ भजन ॥

(मारवाड़ी गीत)

मधुवन में तो मेलो भारी लाग्यो, हरख मना लो,
हिलमिल मधुवन चालो २ बावे रा थे गुण गालो…।
होली रो त्योहार, घणे चाव सूँ मनावो,
कलशाँ भर-भर दूध बावे ऊपर ढलावो।
तेल सिन्दूर लगाओ, इतर भी खूब चढ़ाओ…२…
बावे रा…॥१॥

वर्गों सूँ अँगियाँ थे, खूब रचाओ,
रकम रकम रे पुष्पों रो थे हार बणाओ।
छतर पन्ना रो लाओ, मुकुट हीरों सूँ जड़ाओ—२
…बावे रा…॥२॥

'मित्र मण्डल', तो केवे गुण बावे रा गावो,
होली बावे साथे खेलो, हरख मनावो।
प्रेम सूं हिलमिल गावो, सभी जयकार मनावो—२
…बावेरा…॥३॥

॥ भजन ॥
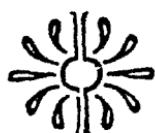
(तर्ज—माता ऐ म्हारे टाबरिया'''मारवाड़ी गीत)

बाबा ओ'''शिखरगिरि रा रखवाल,भोमिया आवो ओ'''
म्हारी सुण लो पुकार, भगतों रा आधार'''
थाँरे ही म्हें शरणे आया, बाबा भोमिया'''॥ १ ॥

बाबा ओ'''फागण रो त्यौहार ; सुहाणों लागे ओ'''
म्हारी सुन लो पुकार, भगतों रा आधार'''
होली थांसू खेलन आया, बाबा भोमिया'''॥ २ ॥

बाबा ओ'''थांरे बिन ओ, मेलो फीको लागे ओ'''
म्हॉरी सुनलो पुकार, भगतों रा आधार,
आसड़ली ने मत ठुकराया, बाबा भोमिया''' ॥ ३ ॥

बाबा ओ'''शिखरगिरी, जात्रा रो हुकम दरावो ओ
म्हारी सुण लो पुकार भगतों रा अधार'''
साथीड़ां ने साथ दराया, बाबा भोमिया'''॥ ४ ॥

बाबा ओ'''‘मित्र मण्डल’, रा टाबरिया, गुण गावे ओ'''
थे तो सुणलो पुकार, भगतों रा आधार '
टाबरियां ने हर बार बुलाया । बाबा भोमिया'''॥ ५ ॥

॥ बधाई ॥

(तर्ज—महाराज की बधाई बाजे छ)

बावेरी बधाई गावोरे, गावोरे हर्षावोरे ॥ बावेरी ॥
ताल मृदङ्ग अरु झाँझ बजाओ, हॅस हँस हर्ष मनावोरे ॥
बावेरी बधाई० ॥ नर नारी मिल मंगल गावो, दिलका
भाव बतावोरे ॥ बावेरी बधाई० ॥ शुद्धमन चितसे ध्यान
लगाओ, निश्चय ही फल पावोरे ॥ बावेरी ॥ सम्मेतशिखर
अधिष्ठायक भैरों, भाव धरी रींझावोरे ॥ बावेरी ॥ 'अमर'
कहे सुनो भाई सज्जनों, भावना मनमें भावोरे ॥ बावेरी ॥

गावो गावो बधाई गावो सभी मिल
अधिष्ठायक महाराज की ॥ गावो-गावो ॥
गावो बजाओ और बावे को रिझाओ,
भक्ति पूर्ण हुई आज को ॥ गावो-गावो ॥
द्वेष हटाओ और प्रेम बढ़ाओ
सभ्य होवे समाज की ॥ गावो-गावो ॥
अमर रहे जैन धर्म का झण्डा
कृपाहो गरीब निवाज की ॥ गावो-गावो ॥

—

॥ आरती ॥

जै-जै आरती बाबा उतारूँ तेरी मोहनी मूरत लागे है प्यारी (लागे है प्यारी बाबा लागे है प्यारी) जै जै ॥

सम्मेन शिखर अधिष्ठायक देवा, (अधिष्ठायक देवा-अधिष्ठायक देवा) नरनारी मिल करे सब सेवा ॥जै जै.।

हाथ त्रिशूल छत्र सिर सोहे, (छत्र सिर सोहे,छत्र सिर सोहे) हिवड़े हार हीरन को मोहे ॥ जै जै ॥

अजब रकम तेरो है मुखड़ो। तेरो है मुखड़ो,तेरो है मुखड़ो। दर्शन करियाँ जावे दुखड़ो ॥ जै जै ॥

भक्त बच्छल तूं कष्ट निवारे। कष्ट निवारे तूं कष्ट निवारे समरे ज्याश कारज सारे ॥ जै जै ॥

अरज सुणो बाबा जयकारी, (बाबा जयकारी बाबा जयकारी) 'अमर' अशीश मांगे है थारी। जै जै ॥

॥ आरती ॥

जै जिन भैरोंनाथा, हाँओ जै जिन अधिष्ठावा,
आरती करूँ मेरे स्वामी, आरती करूँ मेरे बाबा,
सुख सम्पत दाता ॥ ॐ समकित धारी देव ॥
रूप अनुप बना अति सुन्दर त्रिशुल हाथ सोहे,
(हांओ डमरू हाथ सोहे) तीनों समय निरखतां
तीनों वक्त निरखतां, देखत मन मोहे ॥ ॐ समकित ॥
भक्तन का रखवाला, है तू दुख टारनवाला ॥
(हाँओ दुख टारनवाला) खड़े सेवक तेरे द्वार,
खड़े भक्त जन द्वारे, जपते हैं माला ॥ॐ समकित॥
मन शुद्ध आरती कष्ट निवारण, सब मिल कर कीजे,
(हाँओ सब मिल कर कीजे) मन इच्छा फल पावो
(मन माँगा फल पावो) जब बाबो रीझे ॥ॐ समकित॥
करो मांगणी बावे सनमुख, रहें शांति संघ में
(हाँओ रहें शांति संघ में) जैन धर्म रो झण्डो-
(जैन०) 'अमर' रहे जग में ॥ ॐ समकित ॥

* समाप्त *

श्री भोमियाजी महाराज

ॐ की ॐ

॥ प्राचीनता ॥

राजा 'चन्द्रशेखर' बानारसी नगरी के महासेन राजा का पुत्र था जिसके गुणों का वर्णन भगवान श्री 'महावीर स्वामी' ने कोसम्बीपुरी के समवसरन में विराजमान होकर देशना देते हुए किया था। उसमें 'चन्द्रशेखरका' श्री सम्मेत शिखर तीर्थ की यात्रा करना, सीतानाला, मधुबन श्री अधिष्ठाता भोमिया मन्दिर, बड़का वृक्ष, आदि का वर्णन आया है। भगवान के भाषे हुए शब्दों के अनुसार जो ग्रन्थ हैं उन्हीं ग्रन्थों के आधार पर गुरु वीर विजय जी महाराज ने 'चन्द्रशेखर रास' की रचना राजनगर (अहमदाबाद) में सम्वत् १९०२ में करके बताई है। उस रास की कुछ गाथायें यह हैं :—

(देखिये—प्रशास्त गाथा सातवीं)

श्रीशुभ विजय विजय जस नामे, जेमहि मांहि महताजी।
पण्डित वीर विजय तस शिष्ये, चित्त वृत्ति उल्लासे जी॥
चन्द्रशेखर नृप गुण मणिमाला, गुँथी छै आ रासेजी।
सम्वत् ओगणीसे दोय वरसे विजया दशमी प्रसिद्धजी
राजनगर मां रही चौमासु, रास री रचना कीधीजी॥

(देखिये—रासके मंगलाचरण के कुछ दोहे)

कोलम्बीपुरी परिसरे समोसर्‌या जिन 'वीर'।
रत्नचढ़े दिये देशना, ध्वनी जल धर गम्भीर ॥ ३ ॥

❀ ❀ ❀ ❀

शालिभद्र आदिक घणं, तरिया ईण संसार।
वलि अविरज चारिते हुवा, 'चन्द्रशेखर' नृपसार ॥ ८ ॥
प्रेमे पूछे पर्षदा, ते कोन राज कुमार।
जगत गुरु तब उपदिशे, सुन्दर तस अधिकार ॥ ६ ॥

(देखिये—रासके तीसरे खण्ड की तेरमी ढालमें)

जीरे सम्मेत शिखर जइ उतर्या जीरे वन्दी वीश जिणंदा
जीरे सीतानाल निहालीने, जीरे मधुबन जात नारिंद ॥२५॥
जीरे नन्दनवन सम मधुबने, जीरे मण्डप द्राख रसाल।
जीरे सीताफल दाड़िम तरु, जीरे जांफल ही ताल ॥२६॥

❀ ❀ ❀ ❀

जीरे बड़तरु मोटो एक छै, जीरे शाखा प्रशाखा विशाल।
जीरे हंस मोर शुभसारिका, जीरे युगल बसे करीमाल ॥२६॥
जीरे जागता भैरव देव नुं, जीरे सुन्दर चैत्य विशाल।
जीरे मानता माने तेहने, जीरे दिये वांछित तत्काल ॥३०॥

उपरकी रासकी गाथाओंसे सिद्ध होता है कि इस तीर्थ-स्थानमें बड़े वृक्षके नीचे जो अधिष्टाता देव भोमियाजी महाराजका मन्दिर है वो मुद्दत पहले का प्राचीन है, और प्रत्यक्ष चमत्कारी देव है। जो आज भी वही जागती ज्योति सामने मौजूद है। जो कोई सेवा भक्ति करके मानता माने, उसको निश्चय ही मनोवांछित फल मिलता है। यदि किसीको 'चन्द्रशेखर' राजा का पूरा वर्णन जानना हो तो रास मंगाकर देखे। यह चन्द्रशेखर राजा भगवान "महावीर" स्वामी से कई वर्ष पहिले हुआ था। जब यह 'चन्द्रशेखर सम्मेतशिखर तीर्थ यात्रा करने आया तब भी यही अधिष्ठायक देव श्री भोमियाजी महाराज जागती ज्योति मौजूद थे और धर्म सहायक थे, और आज भी हैं। कर्मयोग से इनकी भक्ति का संयोग मिलता है।

कई लोग कहा करते हैं कि भोमियाजी क्या कर सकते हैं? जो भाग्य में लिखा है वही होता है। यह बात ठीक है, होता सब कर्मानुसार ही है, किन्तु जब शुभ कर्म का योग होता है, तब ही देव की मानता करने का

संयोग मिलता है बिना कारण कोई कार्य नहीं हो सकता।

जब अशुभ कर्म का योग आता है तब देव का भी रुष्ट होने का कारण बन जाता है। सब योग कर्मों के अनुसार ही बनते हैं।

मनुष्य को अपने कर्त्तव्य पर दृढ़ रहना चाहिये। समकित धारी देव बिना कारण किसी को कष्ट नहीं देता, वो तो धर्म कार्य में सहायक ही रहता है। जो मनुष्य देवकी सच्ची शक्ति भक्ति में अपना तन, मन, धन निछावर करने में हर समय तैयार रहता है, वही देव का सच्चा भक्त है और देव भी भक्त के आधीन हो जाता है।

आज संसार में चमत्कारी प्रत्यक्ष देव श्री सम्मेत शिखर के अधिष्ठाता श्री 'भोमियाजी महाराज' मौजूद हैं, इसलिये हर मनुष्य को इनकी भक्ति व छत्र छाया में रहकर धर्म ध्यान करते हुए अपने जन्म को सफल बनाना चाहिए।

॥ समाप्त ॥

(तर्ज—पूजन करो रे आनन्दी, जिनन्द पद)

तीर्थ का करो रे सुधारा, शिखर गिरी तीर्थ का करो सुधारा ॥१॥
सब श्री संघ मिल एकता करके, कस कमर होवो त्यारा ॥ शि० ॥२॥
यो तीर्थ जग में बहु मोटो, होने न दो खण्डहारा ॥ शि० ॥
इस तीर्थ को रक्षक भोमियो, करो उद्यम देगा सहारा ॥ शि० ॥३॥
आँख असातना देखने पर भी, धिक है जो करें न विचारा ॥ शि० ॥
जीर्णोद्धार में धन देने से, करे न कोई इनकारा ॥ शिखर ॥
आपस का मत भेद भुलाकर, कंटकों का करो किनारा ॥ शि० ॥
करो प्रतिज्ञा भोमिया सनमुख, करेंगे उद्यम देवो सहारा ॥ शि० ॥
पड़ा कलेजे घाव 'अमर' के दवा है जीर्णोद्धारा ॥ शिखर ॥

(—महाराज की बधाई ब.जे छै)

(तर्ज—तुम्हीं मेरे मन्दिर, तुम्हीं मेरी पूजा) फिल्म—खानदान

तुम्ही मेरे दाता तुम्ही मेरे मालिक,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया— टेक
भँवर बीच बाबा फँसी मेरी नइया,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया ॥१॥
था जिसने भी तुमको विपदा में पुकारा,
तुम्ही ने उसे संकटों से बचाया।
मुझे आश तेरी करो अब न देरी,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया ॥२॥
वरक और सिंदूर लेकर मैं आऊँ,
विविध फूलों से बाबा अंगियाँ रचाऊँ,
तेरी मोहनी मूरत पै मैं वारी जाऊँ,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया ॥३॥
हरो भक्त के शीघ्र सन्ताप सारे,
बड़े आश से पास आयो तिहारे,
करो पार किस्ती है तेरे सहारे,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया ॥४॥
मैं माँगू यही एक वरदान तुमसे,
रहे धर्म की भावना मेरे मन में,
यही दासी नीलम की विनती है बाबा,
तुम्ही हो खेवइया करो पार नइया ॥५॥

(तर्ज :—श्री वसन्ती भवन-पागल)

शिखर गिरि के अधिष्ठाता भोमिया बाबा
जै हो तेरी ॥१॥

शिखर गिरी के बाबा रक्षक सबके संकट चूरते
जो भी तुमको दिल से ध्याता उसकी आशापूरते
मुझको भी है आशा तेरी
भौमिया बाबा जै हो तेरी ॥२॥

तेरी महिमा छा रही है हर तरफ संसार में
कृपा दृष्टि मुझ पे कर दो आई तेरे सामने
मुझको है तेरा सहारा
भोमिया बाबा जै हो तेरी ॥३॥

मांगू मैं वरदान ऐसा धर्म में मन थिर रहे
कैसा भी संकट पड़े पर हम कभी न डिग सके
दो मुझे वरदान ऐसा
भोमिया बाबा जै हो तेरी ॥४॥

जिसने भी तुमको पुकारा उसका बेड़ा पार है
जो भी तुमको दिलसे ध्याता उसका तूँ आधार है
दासी नीलम शरण तेरी
भोमिया बाबा जै हो तेरी ॥५॥

सम्मेत शिखरजी का रास।

दुहा ॥ वादी वीस जिनेसरू, रचस्युं रास रसाल। तीरथ शिखरसमेतनी, महिमा बड़ी विशाल ॥ १ ॥ मोटो तीरथ महियले प्रगट्यो शिखरसमेत। कोड़ाकोड़ी मुनिवरू सिद्ध गए इह खेत ॥ २ ॥ तीरथ शिखरसमेत ए, फरस्या पाप पुलाय। भविजन भेटो भावसुँ, ज्युं सुख संपद थाय ॥ ३ ॥ महिमा शिखरसमेतनी, कहि न सके कवि कोय। गुण अनन्त भगवंतना, तिम ए तीरथ होय ॥ ४ ॥

पहली ढाल चोपाई की।

गिरवर शिखर समो नहि कोय, एहनी महिमा सब जग होय। वीस जिनेसर मुगते गया, मुनिजन ध्यान धरीने रह्या ॥ १ ॥ प्रथम अयोध्यानगरी भली, तिहांजित शत्रु नरेसर वली। विजयाराणी ने सुत जांण, अजित-कुमर सहु गुणनी खाण ॥ २ ॥ जसु इन्द्रादिक सेवा करे, इन्द्राणी अति उच्छत्र धरे। तीर्थंकरनी पदवी लही, अंतर

अरि जिण साध्या सही ॥ ३ ॥ अनुक्रम इम भोगवतां भोग, पुन्य प्रसाद मिल्यो सहु जोग । अवसर दे संवत्सरी दान, संजम लीनी आप सुजांण ॥ ४ ॥ कर्म खपावी पांम्यो, ज्ञान, केवलदर्शन रह्यो प्रधान । विचरे पृथ्वी-मंडलमांहि, भव्यजीव प्रतिबोधन तांहि ॥ ५ ॥ सिंह-सेनादिक गणधर भया, पंचाणवे संख्या सहु थया । एक लाख मुनिवर परिवर्‍या, श्रावक श्रावकणी बहु करया ॥ ६ ॥ तीन लाख वलि तीस हजार, साधवियां जाणो सुविचार ॥ श्रावक सहस अठ्ठाणं सही, दो लाख संख्या गहगही ॥ ७ ॥ पाँच लाख पैंतालीस हजार, श्रावकणी संख्या सुविचार । बहुत्तर लाख पूरवनो आय, कंचनवरण सरीर सुहाय ॥ ८ ॥ साढ़ीच्यारसे धनुप सरीर, मान लह्यो प्रभु गुण गंभीर । गज लांछन प्रभुजीने जांण, अमृत सम जसु मीठी वांण ॥९॥ अनुक्रम प्रभुजी शिखर-समेत, गिरवर पर आव्या निज हेत । लहत मुनिवर ने परिवार, मासखमण अणसणकर सार ॥१०॥ चैत्री सुदि पूनमने दिने, मुक्ति गये प्रभु तीरथ इणे । भूखर खेचर किन्नर सुरी ; इन्द्रादिक सहु उच्छव करी ॥ ११॥ थाप्यो

तीरथ मोटोमही, अठाइ महोच्छव कियो सही। ए
तीरथनी जात्रा करे, ते भवियण अभयसुखवरे ॥१२॥

दूहा ॥ श्रीसंभव जिनराज जी, गए इहाँ निर्वाण ॥
शिखरसमेत सुहामणो, प्रगट्या तीरथ जांण ॥१॥

दूसरी ढाल—सुगण सनेही साजन श्रीसीमंधर स्वाम—ए देशी ॥

सावत्थीनगरी भरी धन संपद बहु थोक, जैतारि
नृप राज करै सुखिया सब लोक। सेनाराणी मोठी
व णी गुणनी खाण, जेहने सुत श्री संभव जनम्या सकल
सुजाण ॥ १ ॥ कंचनवरण सरीर मनोहर प्रभुनो जांण,
लंछन अश्वतणो साहे प्रभुनो परधान। साठ लाख
पूरवनो प्रभुनो आयु प्रमाण, धनुष च्यारसै उच्च पणै
प्रभु देह बखाण ॥ २ ॥ एकसो दोय संख्याये प्रभुने गण-
धर होय दो लाख मुनि जेहनै गुणगरता जग जाय।
तीन लाख श्रीमणी बली ऊपर सहस छत्तीस, भूमंडल
बिचरे प्रभु श्रीसंभव जगदीश ॥३॥ तीन लाख बलि सहस
त्रयाणं श्रावकलोक, पट लख सहस छत्तीस श्रावकणी
संख्या थोक। त्रिमुखयक्ष अरु दुरितादेवी सानिधकार,
विचरंता प्रभु सकल संघ में जय २ कार ॥ ४ ॥ सहस

श्रमण परिवारे प्रभुजी शिखरसमेत, एक मास संलेखण कीनी निजपद हेत। इण गिरि ऊपर पायो प्रभुजी पद निरवांण, तीरथ महिमा महियल मोटी थइय सुजांण ॥४॥

दुहा ॥ अभिनन्दन जिन वंदिये, पायो पद निरवांण। शिखरसमेत सोहामणो, भेटो तथ सुजाण ॥१॥

तीसरी ढाल—सहस श्रमणसुं सुक संजम धरो—ए देशी।

नगरी अयोध्या सुरपुरि सम भली, संवर राजा सोहे मनरली। सिद्धार्था राणी प्रभु तसु नंद ए० अभिनन्दन जिन प्रगटया चंद ए ॥ उल्लालो ॥ चन्द ए सोवन वरण सोहे, धनुष साढी तीनसे ॥ सुन्दर शरीर प्रमाण द्युतिकरा कपि लंछन ते नित बसे। पूर्व लाख पचास आयु, गणधर एकसो सोल ए ॥ तीन लाख मुनि छ लाख आर्या सहस त्रिसत सोल ए ॥१॥ चाल ॥ सहस अठ्यासी दो लख श्राद्धनी, संख्या चौलख सत्तावीसनी ॥ श्रावकगण्यांरी संख्या जाण ए, नायकक्षय कलिका ठाण ए ॥उल्लालो ॥ ठाण ए शिखरसमेत ऊपर मास एक संलेषणा, इक सहस

साधू परवस्या प्रभु मुक्ति पहुँचे पेषणा ॥ इमही अयोध्या मेघ नरवर देवो मान सुमंगला, श्री सुमति जिनवर भए नंदन सदा होत सुमंगला ॥२॥ चाल ॥ सोवन वर्ण धनुष तसु तीनसे, लंछन क्रौंच साहै सुभगे हसै ॥ पूरव लाख पच्यासी आउ ए, इकसौ गणधर गुण गण भाउ ए ॥ उल्लालो ॥ भाउ ए मुनि त्रिण लाख सोहे सहस बीस प्रमांण ए, पण लक्ष तीस हजार साध्वी श्रावक दो लक्ष जाण ए ॥ संख्या इक्यासी सहस ऊपर श्रावका इम आणिए, पण लाख सोले सहस तम्बरु महाकाली मानिये ॥ श्रीशिखर ऊपर सात संख्या सहस साधू सुरंग ए, कर मास की संलेषणो प्रभु मुक्ति पुहता चंग ए ॥ ३ ॥ चाल ॥ इम कोसंबीनरी तात ए, धरनृप तात सुसीमा मात ए, लंछन कमलतणो सुभ हाथ ए ॥ उल्लालो ॥ हाथ ए धनुष प्रमाण पूरा अढाई सै तनु कही, तीन लाख पूरव थित कहावै एक सो गणधर लहो ॥ लख तीन तीस हजार साधू बीस सहस लख च्यार ए, साधवी दोय लख सहस छिहमर श्रावक संख्या सार ए ॥ ४ ॥ चाल ॥ पाँच लाख वलि पाँच हजार ए, श्रावकयांरी संख्या सार

ए ॥ कुसम देव श्यामादेवी कही, लालवरण तन प्रभु सोहै सही ॥ उल्लालो ॥ सोहए शिखर समेत ऊपर, आठ से त्रिण मुनिवरा ॥ कर मास संलेखन प्रभुजी, सेव कर है सुरवरा ॥ श्रीपद्म प्रभुजी मुक्ति पहुता, गिर शिखर महिमा भई ॥ तसु चरण पंकज बालचंद हृदय आनन्द गहगही ॥ ५ ॥

॥ दुहा ॥ श्रीसुपास जिनन्दना, पद्पंकज आराम ॥ भविजन भ्रमरसु सेवतां, पामे वंछित काम ॥ १ ॥

चौथी ढाल—श्रीसीमंधर साहिबा—ए देशी ।

नगर वणारसी सोभता, राजा तात प्रतिष्ट लाल रे ॥ देवी पृथिवी माता जी, स्वस्तिक लंछन सिष्ट लाल रे ॥ १ ॥ श्रीसुपार्श्व जिनंद जी, बीस पूरब लख आयु लालरे ॥ धनुष दोयसै देहनो, कंचनवरण सुहाय लाल रे ॥ २ ॥ श्री० ॥ पचाणवे गणधर कह्या, साधू त्रिण लाख होय लालरे ॥ च्यार लाख तीस ऊपरे, सहस साधवियाँ जोय लालरे ॥ ३ ॥ श्री० ॥ सहस सतावन लक्षनी, श्रावक संख्या थाय लालरे ॥ च्यार लाख वली त्रेणवै

सहस श्रावकणी भाय लालरे ॥ ४ ॥ श्री० ॥ मातंगयक्ष शांतासुरी, पांचसे मुनि परवर लालरे ॥ करि अणसण मुगते गया, नाम लियां निस्तार लालरे ॥५॥ श्री०॥ नगर चन्द्रपुर इण परे, राजा तात महेस लालरे ॥ देवी माता लक्ष्मणा, सुत चन्द्राप्रभु वेस लालरे।६॥श्री०॥ श्रीचन्द्राप्रभु वंदिये, चन्द्रवर्ण तनु जेह लालरे ॥ लंछन चन्द्रतणो भलो, धनुष दोढसे देह लालरे ॥ ७ ॥ श्रीचं० ॥ भविकमलम प्रतिबोधतां, सेवे सुरतर यक्ष लालरे ॥ दस लाख पूरब आउखो, तेणवे गणधर दक्ष लालरे ॥ ८ ॥ श्रीचं० ॥ दोय लाख सहस पचाणवे, मुनि श्रमणी तीन लक्ष लाल रे ॥ असी सहस संख्या कही, श्रावक वलि दोय लक्ष लालरे ॥९॥ श्री ॥ लाख पचास ऊपर वली, श्राविका चउ लक्ष धार लालरे। सहस इकाणवै ऊपरै, प्रभुजीना परिवार लालरे ॥१०॥ श्रीचं० ॥ विजयदेव भृकुटीसुरी सहस साधु परिवार लालरे ॥ संलेखन इक मासनी, पुहता मुक्ति मझार लालरे ॥ ११ ॥ श्री० ॥

॥ दुहा ॥ जय श्रीसुविधि जिनेसरु, जगपति

दीनदयाल ॥ समेतशिखर मुगते गया, भविजनके प्रतिपाल ॥ १ ॥

पंचमी ढाल—श्रीविमलाचल सिरतिला—ए देशी

नगर काकंदी नरपति, एम पिता सुग्रीव ॥ देवी रामा माता सुत, भये सुविध सुभ जीव ॥१॥ रजतवरण सम तनु सत, धनुष एक परिमांण ॥ दोय लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु सुजांण ॥२॥ अठ्यासी संख्या भए, गणधर परम प्रधान ॥ लख दोमुनि विंशति सहस, इक लख श्रमणी जांण ॥ ३ ॥ दोय लक्ष, श्रावक कह्या, अरु गुणतीस हजार ॥ एकत्तर चौ लख सहस, श्रावकणी सुविचार ॥ ४ ॥ सुनो सुतारा सुर अजित, श्रीसंघ सानिधकार ॥ सहस साध परिवारसुं, आए सिखर सुचार ॥५॥ मास संलेखन कर प्रभु, मुक्ति गए इह ठोर ॥ तीरथ महिमा महियलै, प्रगटी च्यारुं ओर ॥६॥ इमहिज शितलनाथनो, हिव सुणज्यो अधिकार ॥ भद्दिलपुर दढरथ पिता, मात नन्दा सुखकार ॥७॥ लंछन तुम श्रीवच्छनो, श्रीशीतल जिनचंद ॥ कंचनवरण नेउ

धनुष, मान शरीर अमंद ॥८॥ एक लाख पूरव कह्यो, प्रभुनो आयु प्रमाण ॥ इक्यासी गणधर कह्या, मुनि इक लाख सुजांण ॥ ६ ॥ एक लाख चालीस सहस, श्रमणी संख्या ओर ॥ सहस तयांसी दोय लख, श्रावक संख्या जोर ॥ १० ॥ सहस अठावन लक्ष चौ ; श्रावकणी सुवि-चार ॥ देवी अशोका ब्रह्म यक्ष, सहु सघ सानिधकार ॥११॥ सिखरसमेत सहस्र एक, साधूने परिवार ॥ मुक्ति गए प्रभु मासकी, संलेखन कर सार ॥ १२ ॥

छट्ठी ढाल—धन-धन संप्रति साचो राजा—ए देशी ।

सिंहपुरी नगरी तिहाँ राजा, विष्णु नरेसर तातजी, कंचनवरण श्रेयांस प्रभुजी, उपज्या विष्णु सुमातजी ॥ १ ॥ नमारे नमो श्री त्रिभूवन राजा, खडग लंछन प्रभु पाय जी ॥ धनुष असो देहमांन चौरासी, लाख वरसनो आयु जी ॥ २ ॥ न० ॥ गणधर वहुत्तर सहस चौरासी, मुनि श्रमणी तीन लक्ष जी ॥ तीन सहस वलि सहस गुण्यासी श्रावक पुण दो लक्ख जी ॥ ३ ॥ न० ॥ अड़तालीस सहस वलि चौलख, श्राविका जाणो सारजी ॥ जक्ष अमर

सुरी मांनवी जांणो, श्रीसंघ सानिधकारजी ॥४॥ न० ॥
सहस मुनीसरनै परिवारै, प्रभुजी सिखरसमेतजी ॥ मास
संलेखण कर प्रभु पोहता, मुक्तिमहल सुख हेत जी
॥ न० ॥ ५ ॥ हिव कंपिलपुर तात भूपनि, श्रीकृतवर्म
सुमातजी ॥ स्यामादेवी अंगज ऊपना, विमलनाथ जगतात
जी ॥ न० ॥ ६ ॥ सूकर लंछन सोवनकाया, आठ धनुष
देहीमांनजी ॥ साठ लाख वच्छरनो आयु, शिष्य सतावन
जान जी ॥ न० ॥ ७ ॥ साठ सहस मुनि अडयस इक लख,
श्रीमणी श्रावक जांणजी ॥ आठ सहस दोय लक्ष श्राविका,
चौ लक्ष संख्या आणजी ॥ न० ॥ ८ ॥ षण्मुख सुरवर
विदिता देवी प्रभुजी शिखरसमेतजी ॥ षट हजार साधू
परिवारे, मुक्ति गये सुख हेत जी ॥ न० ॥ ९ ॥ नगरी
नाम अयोध्या नरवर सिंहसेन जग सार जी ॥ सुजसा
मात तिणे सुत जायो, प्रभुजी अनतकुमार जी ॥न०॥१०॥
लंछन श्येन सोवन सम काया, धनुष पचास प्रमाणजी ॥
तीस लाख वच्छरनो आयु, गणधर पचवीस आंण
जी ॥ न० ॥ ११ ॥ छोसठ सहस मुनीवर सोहै, बासठ
श्रमणी हजार जी ॥ छ हजार लाख दोय श्रावक, श्राव-

कणी इम धार जी ॥ न० ॥ १२ ॥ च्यार लाख वलि चवद हजार ए, अंकुसा देवी होय जी ॥ पाताल यक्ष श्रीसंघ के सानिध कारी ; नित प्रति जाय जी ॥ न० ॥ १३ ॥ आठसै मुनिवरनै परिवारै, शिखरसमेत प्रधान जी ॥ मास संलेखन कर गिरि ऊपर, पुहता पद निरवांण जी ॥ न० ॥ १४ ॥

॥ दुहा ॥ ऐसे धर्म जिणेसरू, पुहता पद निर्वाण ॥ सिखरसमेत गिरिन्द पर; नमो २ जगभांण ॥ १ ॥

सातमी ढाल—जगतगुरु त्रिशला नन्दन जी—ए देशी ।

रत्नपुरी नगरी धणी जी, भानुराय सुजाण राणी सुव्रत मानते जी, धर्मनाथ गुणखाण ॥ १ ॥ जगपति धर्म जिनेसर सार, धनुष पैतालीस तनु कह्यो जी ॥ वज्र लंछन सुखकार ॥२॥ ज० ॥ चोतीस गणधर मुनि कह्या जी, चौसठ सहस सहस प्रमांणु ॥ श्रमणी वासठ सहसस्यूँ जी, श्रावक दोय लक्ष मांन ॥३॥ज०॥ च्यार सहस वलि ऊपरां जो, चौ लख एक हजार ॥ श्रावकणी संख्या कहा जी, दस लक्ष आय विचार ॥ ४ ॥ ज० ॥ किन्नर सुर

यत्ता सुरी जी, एक सहस परिवार। समेतशिखर मुगते गया जी, वादूं वार हजार ॥ ५ ॥ ज० ॥ हथणापुर विश्वसेनना जी, अचिरा मात उदार ॥ शांति जिनेसर जनमिया जी, त्रिभुवन जय जयकार ॥ जगपति शान्ति जिनेसर सार ॥ ६ ॥ मृग लांछन सोवन समो जी, देही धनुष चालीस ॥ आयु वरष इक लाखनो जी, छत्तीस गणधर सीस ॥ ज० ॥ ७ ॥ वासठ सहस मुनि छसै जी, इगसठ श्रमणी हजार ॥ दोय लाख श्रावक कहया जी, ऊपर नेऊ हजार ॥ ८ ॥ दहस त्रयाणूं श्राविका जी, तीन लाख परिवार ॥ गरुडयक्ष देवीसुरी जी, श्रीसंघ सानिधकार ॥ ज० ॥ ९ ॥ नवसै मुनि परवार स्यूं जी, आया सिखरसमेत ॥ मासखमण कर मुगति में जी, पुहता निजपद हेत ॥ ज० ॥ १० ॥ ऐसें हथाणापुर भलो जी, राजाशूर सुतात ॥ कुंथुनाथ जिन जनमियांजी, कंचन तनु श्रीमात ॥ जगतपति कुंथु जिनेसर सार ॥ ११ ॥ छाग लंछन पैंतीसनों जी, धनुष देहनो मांन ॥ सहस पच्याणव वरसनो जी, आयु प्रभुनो जान ॥ १२ ॥ ज० ॥ पैंतीस गणधर दीपताजी, साठ सहस मुनि जांन ॥ छसै साठ सहस वली

जी, श्रमणी संख्या मान ॥ ज० ॥ १३ ॥ सहस गुणियासी लक्षनी जी, श्रावका संख्या होय ॥ सहस इक्यासी तीन लाखनो जी, श्राविका संख्या जोय ॥ ज० ॥ १४ ॥ सातसे साधू परवया जी, देवी बला गन्धर्व ॥ कुंथुनाथ मुगते गया जी, मास संलेखण सर्व ॥ ज० ॥ १५ ॥

॥ दुहा ॥ श्रीअरिनाथ जिनंदनों, कहिस्युं अब अधिकार ॥ श्रोता सुणज्यो प्रेम धर, थास्यै लाभ अपार ॥ १ ॥

आठमी ढाल—देशी विछियानी ।
हरि लाला श्रीजिनकुशल सूरीसरू—ए देशी ॥

हारे लाला श्रीअरिनाथ जिनेसरू, तिहाँ नगरी अयोध्या चन्दरे लाला ॥ तात सुदर्शन मात जो, नंदादेवीना नंदरे लाला ॥ १ ॥ श्रीअ० ॥ लंछन नंद्यावर्त्तनो, तीस धनुप देहिनो माँन रे लाला ॥ कंचन वरण सुहामणो, आयु सहस चौरासी प्रमाण रे लाला ॥ २ ॥ श्रीअ० ॥ इक्क लाख श्रावक ऊपरे, वलि संख्या अधकी जांणरे लाला ॥

सहस बहुतर तीन लक्ष श्राविका संख्या जांणरे लाला ॥ श्रीअ० ॥ ३ ॥ देव देवो सानिध करे, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ मुक्ति गए इण गिर प्रभू कर मास संलेखण सार रे लाला ॥ श्रीअ० ॥ ४ ॥ मिथिला नगर प्रभावती, माता पिता श्री कुम्भ राय रे लाला । लंछन कलस पचीसनो, वपु धनुष सोवन सम काय रे लाला ॥ श्रीमल्लिनाथ जिनेसरू ॥५॥ सहसपचावन वर्षनो, थित गणधर अट्ठावीसरे लाला ॥ भविक कमल प्रति बोधता, जगनायक श्रीजगदीस रे लाला ॥ ६ ॥ श्रीम० ॥ चालीस सहस मूनीसरू, श्रमणी पचावन सहस रे लाला ॥ सहस त्रयासी लक्षनी, श्रावकनी संख्या सार रे लाला ॥ ७ ॥ श्रीम० ॥ श्राविका सित्तर सहसनी, लक्ष तीन संख्या सुविचार रे लाला ॥ सहसमुनि परवारस्युँ, गये मूक्ति संलेखन धार रे लाला ॥ श्रीम० ॥ ८ ॥ राजग्रही राजा पिता, सुग्रीव पद्मावती मात रे लाला । श्यामवरण तनु शोभता, जे कपिल लंछन विख्यात रे लाला ॥ श्रीमूनिसुव्रत स्वामीजी ॥ ६ ॥ धनुष वीस देहीतणो, आयु वच्छर तीस हजार रे लाला ॥ अष्टादश गणधर थया, तीस सहस

मुनिसर सार रे लाला ॥ श्रीमू० ॥ १० ॥ श्रमणी सहस पचवीसनी, संख्या बहुतर हजार रे लाला ॥ इक्क लक्ष ऊपरि श्राविका, तीन लक्ष पचास हजार रे ॥ लाला ॥ श्रीमु० ॥ ११ ॥ वरुणयक्ष देवी भली, नरत्ता सानिधकार रे लाला ॥ सहस मूनि परवार से, गए मुक्ति महल सुख सार रे लाला ॥ श्रीमू० ॥ १२ ॥ विजय पिता विप्रा मातजी सोवन सम श्रीनमिनाथ रे लाला ॥ नीलकमल लंछन कह्यो वपु धनुप पनर आयु साथ रे लाला ॥ श्रीनमिनाथ जिनेसरू ॥ १३ ॥ दस हजार वरसतणो, गणधर सित्तर परिमाण रे लाला ॥ वीस इक्कतालीस सहस क्रम, साधु साधवी संख्या जाण रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १४ ॥ इक्क लख सित्तर सहसनी, तीन लक्ष सहस वलि होय रे लाला ॥ श्रावक संख्या श्राविका, अनुक्रम करि संख्या जोय रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १५ ॥ विचरंता भूमंडले, आया सिखर समेत मझार रे लाला ॥ भृकुटी यक्ष गंधारी सुरी, इक सहस मुनि परवार रे लाला ॥ श्रीन० ॥ १६ ॥

॥ दुहा ॥ परमेसर श्रीपासनी, महिमा जगत विख्यात ॥ शिखर शिरोमणि सहस फण, जग जीवन जगजात ॥ १ ॥

नवमी ढाल—आदर जीव क्षमागुण आदर—ए देशी ।

जय २ परम पुरुष पुरुषोत्तम, पारस पारसनाथ जी ॥ सांवरिया साहिब जगनायक, नाम अनेक विख्यात जी ॥ १ ॥ जय २ शिखर समेत शिरोमणि, श्रीसांवरिया पास जी ॥ ध्यावे सेवे जे नर तेहनी, पूरे वंछित आस जी ॥ २ ॥ ज० ॥ काशी देश वणरसी नगरी, श्रीअश्वसेन नारिंद जी, वामा माता जगविख्याता, तेहना सुत सुखकंद जी ॥ ३ ॥ जय० ॥ पन्नग लंछन नील वरण छवि ; देहि शुभ नव हाथ जी ॥ आयू इकसो वरस प्रमाण गणधर दस प्रभू साथ जी ॥ ४ ॥ जय० ॥ सोल सहस मुनिवर अरु श्रमणी, कही अडतीस हजार जी ॥ भूमण्डल विचरे भवि जनकूं बोध बीज दातार जी ॥ ५ ॥ जय० ॥ चौसठ सहस लाख इक श्रावक, गुणचालीस हजार जी ॥ तीन लाख श्राविकणी संख्या, पार्श्वयक्ष सुर सार जी ॥ ६ ॥ जय० ॥ बीस जिनेसर मुगते पुहता, महिमा यइय अपार जी ॥ तीण ए तीरथ प्रगट्यो जगमें, मुक्तितणो दातार जी ॥ ७ ॥ जय० ॥ छह री पाले जे नर भावें, भेटे शिखर गिरिंद जी ॥ ते नर मनवंछित फल पावे ।